जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष - ५४ अंक - ३
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १००) रु०
आजीवन - १०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

फाल्गुन : सम्वत् २०६९ वि० मार्च २०१३

आर्य समाज कलकता के संस्थापक प्रधान भागलपुर के रईस राजा तेजनारायण सिंह

राजा तेजनारायण सिंहजी

आर्य समाज कलकत्ता के इतिहास के साथ भागलपुर के प्रसिद्ध जमींदार राजा तेजनारायण सिंह का सम्बन्ध स्वतः ही जुड़ जाता है। आप रईस थे, सम्पन्न थे और स्वामी दयानन्द के भक्त थे। सन् १८८५ ई० में जब आर्यसमाज कलकत्ता की स्थापना हुई तो राजा तेजनारायण सिंहजी आर्यसमाज कलकत्ता के संस्थापक प्रधान बनाये गये। उस समय प्रसिद्ध विद्वान् पं० शंकरनाथ पण्डित आर्य समाज के संस्थापक उप-प्रधान बने और बाबू महाबीर प्रसादजी आर्य समाज कलकत्ता के संस्थापक मन्त्री बने। श्री महाबीर प्रसाद जी भी राजा तेजनारायण सिंह के सम्बन्धी और व्यावसायिक प्रधान कार्यकर्त्ता थे। आर्यसमाज कलकत्ता में उनके सहयोग का श्रेय भी राजा तेजनारायण को ही है।

राजा तेजनारायण सिंह का परिवार भागलपुर में रहता थे। इनके पूर्वज लखनऊ में नवाबगंज के रहने वाले थे। यहाँ से कलवार वंश के शाह खड़गी दासजी भागलपुर की व्यावसायिक मण्डी में आकर बस गये। खड़गी दास के पुत्र साहु नन्दी लालजी थे। साहु नन्दी लालजी के घर बाबू लक्ष्मीनारायणजी का जन्म हुआ। राजा तेजनारायण सिंहजी इन्हीं बाबू लक्ष्मीनारायणजी के सुपुत्र थे। कलवार क्षत्रिय मित्र की सूचना के अनुसार राजा तेजनारायणजी का जन्म संवत् १९०९ की कार्तिक मास की अमावास्या को गुरुवार के दिन हुआ था। रईस तो ये थे ही। इनके पूज्य पिताजी बाबू लक्ष्मीनारायणजी ने इन्हें गवर्नमेंन्ट हाई स्कूल भागलपुर में अंग्रेजी की शिक्षा दिलायी। बाबू तेजनारायणजी बड़े कुशाग्रबुद्धि थे और उन्होंने शिक्षा में अच्छी सफलता प्राप्त की, किन्तु १७ वर्ष की कच्ची आयु में ही आपके पिताजी का शाश्वतिक वियोग हो गया। पिताजी के देहान्त के पश्चात् इस अल्पायु में ही आपको सब ताल्लूकेदारी के काम सम्हालने पड़े। सरकार ने आपको रायबहादुर की पदवी से विभूषित किया। प्रजा-पालन, अपने ताल्लुके में कुआँ, तालाब, नालियाँ, बांध आदि का लाखों रुपयों के व्यय से निर्माण कराया। राजा तेजनारायणजी ने भागलपुर में एक स्कूल भी खोला और राजा तेजनारायण डिग्री कालेज भी भागलपुर में चालू कर दिया। सन् १८८७ ई० में सरकार ने आपको रायसाहब का खिताब दिया था।

स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में :—स्वामी दयानन्द सरस्वती कलकत्ता आने से पूर्व भागलपुर गये थे और भागलपुर की सुबुद्ध देश—जाति-प्रेमी जनता पर स्वामी के आगमन का अच्छा प्रभाव पड़ा था। ऐसा सहज अनुमान है कि तेजनारायणजी भागलपुर से ही स्वामी दयानन्दजी के मिशन के समर्थक बन गये थे।

राजा तेजनारायणजी उदार दानी थे और देशप्रेमी थे। जाति उत्थान की भावना उनमें काम कर रही थी। उस समय कलकत्ता देश की राजधानी थी और बंगाल-बिहार का सारा राजनयिक कार्य कलकत्ता को केन्द्र करके ही चल रहा था। राजा तेजनारायण ने कलकत्ता में मोजे, बनियाइन आदि बनाने का एक कारखाना शुरू किया था और उनकी ओर से यहाँ का कार्य उनके सम्बन्धी बाबू महावीर प्रसादजी देखते थे वैसे बाबू महावीर प्रसादजी थे तो आर्यसमाज कलकत्ता के मन्त्री, किन्तु राजा तेजनारायणजी का प्रायः कलकत्ता में रहना कम होता था, अतः बाबू महावीर प्रसादजी ही प्रधानजी भी कहलाते थे।

आर्य समाज कलकत्ता की सेवा में :—सन् १८८५ ई० में जब आर्यसमाज कलकत्ता की स्थापना हुई और राजा तेजनारायणजी इसके प्रधान बने तो स्वाभाविक ही था कि पं० शंकरनाथजी जैसे साहित्य-प्रेमी, विद्वान् के सम्पर्क से यहाँ साहित्य का कार्य भी आरम्भ होता। कलकत्ता में आर्य समाज के लिए राजा तेजनारायण ने क्या धनराशि दी थी इसका तो कहीं उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु सन् १८८७ ई० में जब आर्यावर्त प्रेस ६२ नं० शम्भूनाथ पण्डित स्ट्रीट, कलकत्ता में खुला तो राजा तेजनारायण जी ने २०,००० रुपये आर्यावर्त प्रेस और पत्र के लिए दिये थे। यह भी सुना जाता है कि देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय को ऋषि की जीवनी की सामग्री एकत्र करने के लिए राजा तेजनारायणजी ने १०,००० रुपयों की राशि प्रदान की थी।

राजा तेजनारायणजी उदार विचारों के सुधारवादी रईस थे। आपने विलायत में भी कारबार आरम्भ किया। आप सन् १८९८ ई० में इंग्लैण्ड-योरोप की यात्रा पर गये। ११ फरवरी सन् १८९८ ई० को आप इंग्लैण्ड से भारतवर्ष के लिए प्रस्थान करने वाले थे कि उसी दिन अचानक ४७ वर्ष की अवस्था में लन्दन में ही आपका देहान्त हो गया और आर्यसमाज कलकत्ता अपने संस्थापक प्रधान उदार रईस राजा तेजनारायणजी सिंह की सेवाओं से वंचित हो गया।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ५४ अंक — ३

फाल्गुण-२०६९ वि०
दयानन्दाब्द १८८
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११३

मार्च— २०१३

मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

सम्पादक :
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय,
एम. ए.

सह सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्य प्रकाश जायसवाल
पं० योगेश राज उपाध्याय

इस अंक की प्रस्तुति

१. आर्य समाज की गतिविधियाँ २

२. इस अंक की प्रस्तुति ३

३. उषाकाल और सफल जीवन ४

४. महर्षि वचन सुधा-१९ -प्रो० उमाकान्त उपाध्याय ७

५.संयुक्त परिवार अभी भी उपयोगी -प्रो० उमाकान्त उपाध्याय ९

६.ग्रन्थ सम्पादन तथा प्रवास विवरण
लेखन-कर्म (२) -डॉ० भवानीलाल भारतीय १२

७.शिव भक्तो ! कुछ सोचें !!! -आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा १५

८.चमकीला आवरण -श्री महात्मा ओम्मुनि २१

९. कर्म करने के अधिकार का हमें
दुरुपयोग नहीं करना चाहिये -श्री हरिश्चन्द्र 'वैदिक' २४

आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६, दूरभाष : २२४१-३४३९

email : aryasamajkolkata@gmail.com

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है !
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा ।

३

साधना-सोपान

उषाकाल और सफल जीवन

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती।
यथा चिन्नो अबोधय: सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ।। सा० ४२१

शब्दार्थ

महे = महान् (के लिए)
यथाचित्=जिस प्रकार
न; = हमको
न: = हमें
बोधय = जगाओ
अद्य = आज, भी
उष: = उषा, प्रभात
वाय्य = विस्तृत
राये = धन - ऐश्वर्य के लिए
सुजाते = जन्म से शोभा सम्पन्न
दिवित्मती = प्रकाशवाली
अश्वसूनृता = मधुर शब्दोंवाली
अबोधय: = पहले जगाती रही
सत्यश्रवसि = सत्य श्रवण वाली

भावार्थ :-हे उषा ! महान् धन-ऐश्वर्यों के लिए हमें जगा । तू सुजाता है, हमारे प्रभात को सुप्रभात बना । तेरे गर्भ में सुदिन-सुप्रकाश निहित हैं, हमें सुदिन, सत्यज्ञान, सूनृता वाणी, सत्य श्रवण का वरदान प्रदान करो ।

विचार विन्दु :

१. ब्राह्म मुहूर्त - उषा का स्वास्थ्य : सफलता से सम्बन्ध

२. महान् धन -ऐश्वर्य, उपलब्धि का त्रि-सूत्र–(क) उषा जागरण, (ख) सत्यश्रवण (ग) प्रभात को सुप्रभात तथा दिन को सुदिन निर्माण

३. उषा दिन की देवी-लक्ष्मी है, घर की देवी लक्ष्मी भी सुप्रभात-सुदिन बनाने में सचेष्ट हो ।

व्याख्या

प्रस्तुत मन्त्र में उषाकाल को सम्बोधित किया गया है । उषा से अनुरोध हैं कि हे उषे ! हमें जगा दो, हमें सावधान कर दो जिससे कि हम महान् बन सकें, धन-ऐश्वर्यो को प्राप्त कर सकें । हे उषे! तुम

तो सुदिन वाली हो, तुम दिन को सुदिन बनाती हो। मनुष्य अपने जीवन को महान्, सफल बनाने के लिये सजगता-पूर्वक, सावधानी से अपने दिन को सुदिन बनाता है ।

भारतीय परम्परा में उषाकाल को 'ब्राह्ममुहूर्त' कहा जाता है । बड़े तो बड़े, बच्चों को भी उषाकाल में जगा देते थे । प्रसिद्ध पद है-''जागिये रघुनाथ कुँवर! पंछी-गण बोले ।'' ब्राह्ममुहूर्त का अर्थ है ब्रह्म बनने का मुहूर्त । ब्रह्म का अर्थ है बृहद् महान । ज्ञान ब्रह्म है। काव्य-रस ब्रह्मानन्द सहोदर है और परमेश्वर तो ब्रह्म है ही। भगवान का, ब्रह्म का भक्त बनना है तो ब्राह्ममुहूर्त का सदुपयोग करो । ज्ञान प्राप्त करना ह तो ब्राह्ममुहूर्त में विद्या का अभ्यास करो । धन, सम्पत्ति, स्वास्थ्य सब का चिन्तन और अभ्यास ब्राह्ममुहूर्त में करना चाहिए । मनु-स्मृति की एक विशेष अनुशंसा है -

''ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत् ।
काय क्लेशाँश्च तन्मूलान् वेद तत्त्वार्थमेव च ।।''

अर्थात् मनुष्य को ब्राह्ममुहूर्त में उठना चाहिये और अपने धर्म और अर्थ का चिन्तन करना चाहिए। शरीर में यदि कोई क्लेश हो तो उसका भी निदान सोचना चाहिये और विद्या पढ़ने वालों को विद्या का अभ्यास करना चाहिये । ऋषियों का बड़ा सीधा कहना है कि जो लोग सूर्योदय के समय सोते हैं और सोते चेहरों पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है, उनका ओज और तेज सूर्य हरण कर लेता है । जो सूर्योदय से पहले उठकर उदयशील सूर्य का सेवन करते हैं उन्हें सूर्य प्राण देता है । वेद मन्त्र कहता है-

''प्राण: प्रजानां उदयति एष सूर्य: ।''

अर्थात सूर्य सारी प्रजाओं के लिये प्राण लेकर उगता है । जलचर, थलचर, नभचर, पशु-पक्षी, मनुष्य, वनस्पति सब को प्राण चाहिए और यह प्राण उदयशील सूर्य सब के लिये दान करता है ।

प्रस्तुत मन्त्र में उषा को 'सुजाता' कहा गया है । सुजाता का अर्थ है-जो जन्म से सुन्दर, शोभा सम्पन्न हो। उषा सुजाता तो है ही किन्तु अपने लिये सुजाता हमें बनाना पड़ता है । उषा धन की लक्ष्मी है, देवी है । जो प्रात:काल अपने कार्य सम्पन्न करने का अभ्यास करते हैं उनका दिन सुन्दर और सफल, सुदिन बना रहता है । जिनका प्रभात नष्ट हो गया उनका दिन सुदिन बनना बड़ा कठिन हो जाता है ।

प्रात:काल सत्य-श्रवण की बेला है । अग्नि और इन्द्र को पूजने की बेला है ।

''प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे ।''

अर्थात् हम प्रभात की बेला में अपनी संकल्पाग्नि को जलाते हैं । ऐश्वर्य के देवता इन्द्र को पुकारते हैं । यह सत्य को जगाना, संकल्प को जगाना ही तो सत्य-श्रवण है ।

उषा को इस मन्त्र में 'सुनृता वाणी' भी कहा गया है । प्रात:काल अपनी वाणी को भी सूनृता मधुर बनाने का यत्न करना चाहिए । कहते हैं-''कड़वे वचन न बोल किसी से ।''

कड़वे वचन संसार के सबसे बड़े दुर्गुणों में एक है, और मधुर वचन बहुत बड़ा गुण है । भगवान से प्रार्थना करते हैं --

''वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधु संदृश: ।''

मैं मीठी वाणी बोलूँ और मधु जैसा बन जाऊं ।

इस मन्त्र में महान् धन और ऐश्वर्य की उपलब्धि करने के लिए एक 'त्रिसूत्री' कार्यक्रम बताया गया है-

(क)उषा जागरण- उषाकाल, ब्राह्ममुहूर्त में, सूर्य के उदय होने के घन्टा, दो घन्टा पहले बिस्तरा छोड़कर सावधानी के साथ इस सर्वोत्तम काल में स्वच्छतम वायु, प्राणतत्व से भरपूर वातावरण में भ्रमण, व्यायाम, योग साधना, स्वाध्याय करके अपने धर्म और अर्थ के कामों का चिन्तन करे और योजना बनाकर कार्य में जुट जाय ।

ख) सत्य श्रवसी-सत्यश्रवण में, निरुक्त के अनुसार श्रवस का श्रवण के अतिरिक्त ऐश्वर्य, धन, अन्न आदि भी अर्थ होता है। उषा का सेवन करने वाले लूट, खसोट, चोरी चालाकी से प्रायः दूर रहते हैं। अपने परिश्रम से ऐश्वर्य पाते हैं। एक ऐश्वर्य है, बैंक वित्तीय संस्थाओं से उधार पर ऐश्वर्य क्रेडिट (On credit Money), उषा जागरण वाले का धन ऐश्वर्य क्रेडिट पर नहीं, वास्तविक होता है ।

(ग) सुप्रभात-सुदिन (सुजाता-दिवत्मती) का निर्माण-जिस व्यक्ति में सुजागरण, उत्साह सम्पन्नता, सुविचार (Positive thinking) कार्य में सुदक्षता होगी उसका प्रभात (कार्य को प्रस्तुति का काल सुप्रभात) और दिन सफलतादायक सुदिन होगा।

सुदिन कैसे बनें –

मन्त्र में यह बताया गया है कि जैसे ज्योतिष्मती उषा दिन को सुदिन बनाती है वैसे हम भी अपने दिन को सुदिन बनावें । प्रश्न है, सुदिन कैसे बनाती हैं ।

सुदिन क्या है ? और कैसे अपने दिन को सुदिन बनावें ? यों तो सुदिन का अर्थ है अच्छा दिन और अच्छे दिन का, सुदिन का भाव यह है कि हमारा दिन उत्साह उल्लास, सफलता से भरा हो और अपने कार्यों में हमें प्रगति की, उन्नति की आशा भी दिखाई दे । दिन को सुदिन बनाने का सीधा सा मार्ग है :—

हम प्रातःकाल या पूर्वसंध्या को अपने सम्पूर्ण दिन का पुरोगम बना लें । हमको क्या-क्या काम करना है ? कैसे काम करना है ? इन कामों को करने के लिए हमारे पास क्या साधन हैं, क्या सुविधाएं हैं ? हम न तो अपनी शक्ति सुविधा साधन से बहुत ऊपर उठकर काम करने की सोंचें, न अपने काम में हताश या निराश हों । हमें अपने करणीय कार्यों की प्राथमिकताएं (Priorities) भी तय कर लेनी चाहिए । मन को निराश नहीं होने देना चाहिए । ध्यान रखना चाहिए कि सदुपाय करें और काम में आनन्द और उत्साह का अनुभव करें । बस दिन सुदिन बन जाता है ।

ध्यान में यह सूक्ति रखनी चाहिए -

'उत्साह सम्पन्नमदीर्घसूत्रं, क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्
शूरं, कृतज्ञं दृढ़ सौहृदं च, लक्ष्मीः समायाति निवास हेतोः ।।'

अर्थात् मन में उत्साह, काम में शीघ्रता, कार्य की विधि का ज्ञान, व्यसन से रहित, शूर, कृतज्ञ और दृढ़ मित्र के पास लक्ष्मी स्वयं आती है । दिन सुदिन बना रहता है ।

इस मन्त्र में महान् धन ऐश्वर्य की उपलब्धि का सूत्र बताया गया है ।

•

''महर्षि वचनसुधा'' – १९

–प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

स्वामी जी ने सप्तम समुल्लास का शीर्षक इस प्रकार लिखा है–**''अथेश्वर वेदविषयम् व्याख्यास्याम:''** अब ईश्वर और वेद विषय की व्याख्या करेंगे ।

सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लासों के क्रम पर ध्यान दें तो यह एक जीवन निर्माण का क्रम दिखाई पड़ता है । प्रथम समुल्लास में ईश्वर के नामों की व्याख्या करके ऋषि ने द्वितीय समुल्लास में शिक्षा–'कुमार भृत्या' की व्याख्या की है । तृतीय समुल्लास में अध्ययन-अध्यापन-विधि का वर्णन हैं । इस प्रकार द्वितीय और तृतीय समुल्लास जन्म से लेकर ब्रह्मचर्य आश्रम पर्यन्त जो आवश्यकीय विषय हैं उनके सम्बन्ध में लिखे गये हैं । चतुर्थ समुल्लास गृहस्थाश्रमियों के सम्बन्ध में है । पंचम समुल्लास में वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों का वर्णन है । इस प्रकार द्वितीय समुल्लास से आरम्भ कर पंचम समुल्लास तक मनुष्य जीवन से सम्बन्धित सभी कर्त्तव्य कर्मों का वर्णन हो चुका है । मनुष्य की व्यक्तिगत सर्वांगीण उन्नति के लिये और इन चारों आश्रमों के व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक कर्त्तव्यों की विस्तार से व्याख्या हो चुकी है । षष्ठ समुल्लास में राजा-प्रजा के सम्बन्ध में बहुत विस्तार से विचार हो चुका । इस प्रकार लौकिक एवं व्यावहारिक पक्ष की पूर्ण व्यवस्था हो चुकी । अब सातवें समुल्लास में ईश्वर और वेद के सम्बन्ध में विचार प्रकट कर रहे हैं । आठवें समुल्लास में सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय की व्याख्या है । नवें समुल्लास में विद्या, अविद्या, बन्ध-मोक्ष आदि की व्याख्या हैं । दशम सम्मुल्लास में आचार-अनाचार भक्ष्य-अभक्ष्य विषयों का वर्णन है ।

ईश्वर और वेद-विषय :–ईश्वर और वेद दोनों के सम्बन्ध में कई प्रचलित भ्रान्तियाँ थीं । आज इस ग्रन्थ के प्रकाशन के शताधिक वर्षों पश्चात् बहुत सारे लोग संसार के बनाने वाले, चलाने वाले, पालन करने वाले ईश्वर की एकता को मानने लगे हैं । जिस समय स्वामीजी ने लोगों को सुधारना, समझाना और सच्चे धर्म की शिक्षा देना आरम्भ किया था उस समय ईश्वर, गॉड और अल्लाह तीनों का स्वरूप अलग-अलग था । तीनों अलग-अलग जगहों में निवास करते माने जाते थे । विष्णु क्षीर सागर में, शिव कैलाश पर्वत पर, अल्लाह चौथे आसमान पर और गॉड सातवें आसमान पर । सभी एक देशीय ईश्वर में विश्वास करते थे और सबके पीर-पैगम्बर, अवतार आदि साथ-साथ लगे थे । इस प्रकार हिन्दुओं का ईश्वर, ईसाईयों का गॉड और मुसलमानों का अल्लाह सब अलग-अलग, एक दूसरे से पृथक माने जाते थे । 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' बहुत परवर्ती विचार है ।

वेदमूलक भारतीय मतपन्थों में भी शैव, शाक्त, वैष्णव कितने ही अलग-अलग सम्प्रदाय उभर कर ईश्वर की अलग-अलग प्रकार से व्याख्या करते थे । इसी प्रकार वेद के सम्बन्ध में भी बड़ा भ्रम छाया हुआ था । कई लोग ऐसा मानते थे कि वेद को ब्रह्मा ने बनाया है । कई ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद मानते थे । लोग वेदों में मानवीय इतिहास भी मानते थे । कुछ लोग वेदों को जादू-टोना का ग्रन्थ

वेद मानते थे । लोग वेदों में मानवीय इतिहास भी मानते थे । कुछ लोग वेदों को जादू-टोना का ग्रन्थ भी कहते थे । बहुत सारे वेदत्रयी को आधार बनाकर अथर्ववेद को वेद ही नहीं मानते थे । फिर ऐसे भी बहुत से लोग थे जो यह कहते थे कि शंखासुर वेदों को चुराकर पाताल लोक में चला गया । अब इस मर्त्यलोक में, कलियुग में वेद हैं ही नहीं । इन सारे भ्रान्तिमूलक विचारों की भूमिका में स्वामी जी ने इस सप्तम समुल्लास में ईश्वर और वेद विषय की व्याख्या की है ।

उस समय योरोप के तथाकथित प्राच्य विद्याविशारदों ने बड़े बल पूर्वक यह कहना आरम्भ कर दिया था कि वेद में एक ईश्वर का वर्णन नहीं है, बल्कि वेद तो बहुत-सारे देवताओं को मानते हैं । सप्तम समुल्लास आरम्भ करते हुए स्वामीजी ने पहले इसी मान्यता का निराकरण किया है कि वेद में अनेक ईश्वर नहीं है । वेद केवल मात्र एक ही ईश्वर का वर्णन करते हैं ।

कई लोग कहते है कि आरम्भ में वेद एक ही था और महाभारत के रचयिता वेद व्यास जी ने चारों वेदों की संहिताओं को अलग-अलग सम्पादन किया । इसीलिए उनका नाम वेद व्यास पड़ा । यह बात अशुद्ध है । वेद में ही चारों वेदों के उत्पन्न होने का विधान है । मंत्र में आता है—''तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतात् ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुः तस्मात् अज्ञायत ॥''

इसी प्रकार रामायण काल में हनुमान जी किष्किन्धा काण्ड में सुग्रीव का दूत बनकर श्री राम के पास गये थे वहां श्री रामचन्द्र ने हनुमान जी की बातों से प्रभावित होकर लक्ष्मण से कहा था कि इस व्यक्ति ने जिस तरह बात की है उससे पता चलता है कि इसने चारों वेदों को पढ़ा है, जो मनुष्य ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद न पढ़ा हुआ हो वह इस तरह से बात नहीं कर सकता है । इससे पता चलता है कि वेदों का ऋ०,यजु साम आदि संहिता का वर्गीकरण वेद व्यास जी से बहुत पहले का है । इनका नाम वेद व्यास इसलिए था कि इन्होंने वृत्त के व्यास की तरह वेदों को पूरा-पूरा पढ़ा था इसीलिए इनका नाम वेद व्यास पड़ा।

ईशावास्यम्
पी-३०, कालिन्दी
कोलकाता-७०००८९

फोन (०३३) २५२२२६३६
चलभाष : ०९४३२३०१६०२

Understanding Satyartha Prakash
(The Light of Truth)

आचार्य उमाकान्त उपाध्याय द्वारा रचित यह ग्रन्थ अंग्रेजी भाषा के पाठकों के लिए सत्यार्थ प्रकाश को अच्छी तरह समझने के लिए अत्यन्त उपयोगी सहायक ग्रन्थ है । यह ग्रन्थ **गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार** से सम्मानित है । पुस्तक का मूल्य १००) रु० है (डाक खर्च अतिरिक्त)

पुस्तक प्राप्ति स्थान :– **आर्य समाज कलकत्ता**
१९ विधान सरणी कोलकाता-६

संयुक्त परिवार अभी भी उपयोगी

– प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

परम्परा से भारतवर्ष संयुक्त परिवारों का देश है । कई बार तो दो-तीन पीढ़ियाँ भी एक साथ रहती आयी थीं । इसका मुख्य कारण आनुवंशी, खानदानी पेशा था । कृषक, वंशानुवंश कृषि करते थे । यही बात नाई, धोबी, लोहार, सोनार सबके साथ लागू होती थी । एकाध अपवाद तो सदा, सर्वत्र रहे हैं किन्तु सामान्य रूप में परिवार अपने पेशों से ही जुड़े रहते थे । यह व्यवस्था संयुक्त परिवारों के अनुकूल थी, बल्कि यह कहना चाहिए कि इस खानदानी व्यवस्था के लिए संयुक्त परिवार आवश्यक थे । परम्परा से लोग गांव में ही रहते थे, ५—१० प्रतिशत ही नगर निवासी थे । १९४७ ई० में देश स्वतंत्र हुआ और १९५१ ई० से योजनाबद्ध आर्थिक विकास का इतिहास आरम्भ हुआ । परिवारों का गठन प्रायः आर्थिक समस्याओं को केन्द्र करके हुआ करता है । इस प्रकार भारतवर्ष में आर्थिक संक्रमण का काल प्रथम पंचवर्षीय योजना के साथ आरम्भ हुआ ।

आर्थिक संक्रमण के साथ परिवार संस्था का विघटन :–प्रथम पंचवर्षीय योजना कृषि प्रधान थी । कृषि की प्रधानता देश-विभाजन के पश्चात् अति महत्वपूर्ण हो गयी थी । कृषि उत्पादन की दृष्टि से पाकिस्तान, पंजाब और बंगलादेश बहुत अधिक अतिरिक्त, सरप्लस उत्पादन करने वाले थे । अधिक उपजाऊ भूमि, अतिरिक्त खाद्यान्न और उद्योगों के लिए कच्चा माल, रूई, जूट आदि पैदा करने वाली भूमि पाकिस्तान में रह गयी और अधिक जनसंख्या शरणार्थी आदि भारत में आ गये । रूई, जूट, गन्ना आदि की मिलें भारतवर्ष में थीं । अतः प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि की प्रधानता रही । इस कालावधि में परिवारों का विघटन भी कम हुआ ।

महात्मा गांधी चाहते थे कि कृषि के साथ ग्राम्य उद्योग, कुटीर उद्योग एवं लघु उद्योग विकसित हों । यह योजना, सम्भवतः भारत के आर्थिक विकास के अधिक अनुकूल पड़ती, किन्तु राष्ट्रीय नीति के निर्माता श्री नेहरू जी के मन में पश्चिमी देशों के बृहद् उद्योग और रूस की पंचवर्षीय योजना घर किये बैठी थी, यही उन्हें उपयोगी लग रही थी । अतः द्वितीय पंचवर्षीय योजना उद्योग प्रधान बनायी गयी ।

नेहरू जी प्रायः कहा करते थे कि पूर्व पुरूषों ने प्रयाग, हरिद्वार, गंगासागर आदि तीर्थ स्थल बनाये थे । हम भी राऊरकेला, भिलाई, सिन्द्री, दुर्गापुर आदि नये तीर्थस्थान बना रहे हैं । ये सब सरकारी उद्यम थे । किन्तु अपरिपक्व शीघ्रता की नीति थी । तृतीय पंचवर्षीय योजना फिर कृषि प्रधान बनी । इस तरह आज हमारी १२ योजनाएं पूरी होने जा रही है । इन योजनाओं के ६० वर्षों में नीति

की निरन्तरता न रही। नेहरू जी सोशलिस्ट थे । रूस की तरह यह नीति भी समाप्त हो गयी । आज हम पूर्ण रूप से आर्थिक विकास की दृष्टि से पूंजीवादी व्यवस्था में चल रहे हैं ।

आधुनिकता और शहरीकरण की ओर संक्रमण :–आर्थिक उन्नति का आधुनिक अर्थशास्त्री यह अर्थ लगाते हैं कि शहरीकरण कितना बढ़ रहा है और साथ ही देश की जनसंख्या में बिजली, टेलीफोन और यन्त्रीकरण कितना बढ़ रहा है । भारतवर्ष में शहरीकरण प्रगति पर है । गांव में पुरानी परम्परा की हल-बैल वाली खेती और तालाब रहट आदि की पुरानी सिंचाई भी नहीं के बराबर हो गई है । गांव में जंगल बाग कम हो गये हैं । इसलिए परम्परा के जलावन, लकड़ी और उपले आदि भी समाप्त ही हो गये हैं । इन सारे परिवर्तनों का प्रभाव परिवार के संरचना पर पड़ रहा है ।

वृद्धों और शिशुओं की समस्या :–गांव में ६५–७० साल के ऊपर के वृद्ध बेकार हो गये हैं, साथ ही युवती स्त्रियाँ रोजगार की खोज में बच्चों की परवरिश पर ध्यान कम दे पा रहीं हैं । घर के खर्चे बढ़ गये हैं । आटा पीसने और चावल कूटने, तेल निकालने आदि की मशीनें गांव में भी बढ़ती जा रही हैं । संयुक्त परिवार में दादा-दादियां, नाती-पोते-पोतियों की संभाल कर लेते थे । किन्तु इस संयुक्त परिवार के विघटन ने सामाजिक दायित्व और लोक लज्जा को समाप्त कर दिया है । इस तरह टूटते संयुक्त परिवारों की ओर न ग्राम पंचायतों का ध्यान है, न सरकार का ध्यान है और बच्चे और बुजुर्ग दोनों ही उपेक्षित हो रहे हैं ।

सरकार की जनकल्याण योजनाओं की पड़ताल :– सरकार ने कुछ जनकल्याणकारी योजनाएँ चालू की हैं–(१) ग्रामीण रोजगार योजना (२) वृद्धों को पेंशन (३) बेरोजगार सहायता (४) विधवाओं को सहायता । ये सभी योजनाएं यूँ देखने पर ठीक ही लगती हैं । वृद्धों को पेंशन अच्छी योजना है । पेंशन के आर्थिक आकर्षण से बेटे-बहुएँ बूढ़ों का ख्याल रखें, अच्छी बात है । जहाँ तक मनरेगा, रोजगार योजना की बात है उसकी सफलता पर रिपोर्ट उत्साह वर्धक नहीं है । कहते हैं कि काम करने वाले भी बेगार करते हैं । पूरा परिश्रम नहीं करते । सरकार का ७०–८० प्रतिशत पैसा बिचौलियों के हिस्से में चला जाता है और थोड़े परिश्रम से जो थोड़ी मजदूरी ग्रामीण मजदूर को मिल ज़ाती है उसी में बन्दरबांट पर वह राजी हो जाता है । समग्र रूप से कार्य संस्कृति और परिश्रमशीलता यूँ नष्ट हो रही है। यह राष्ट्रीय हित में मंहगा सौदा है ।

जहां तक बेकारों को राहत की योजना है, यह भूचाल, तूफान, सुनामी जैसी विपदाओं के बाद अल्पकालिक रूप से तो ठीक हो सकती है किन्तु रोजगार की जगह परिश्रम और कार्य संस्कृति का समाप्त होना चिन्ताजनक है । सरकार ४० वर्ष और ऊपर की विधवाओं को राहत देती है । आगे १८ साल और ऊपर की विधवाओं को राहत देने की योजना हैं । इन युवती विधवाओं को संयुक्त परिवार के बुजुर्गों की छत्र-छाया में रोजगार की आवश्यकता है । यहां संयुक्त परिवार बहुत आवश्यक है ।

गांव में सुरक्षा, असामाजिक तत्व, शराबी, जुआड़ी इतने बढ़ते जा रहे हैं कि सारा पारिवारिक जीवन असुरक्षित हो गया है । गांव में रात को घर से बाहर सोना बन्द हो गया है । इस स्थिति में स्त्रियों

और बच्चों की सुरक्षा के लिए संयुक्त परिवार आवश्यक लगते हैं ।

शहरों की अवस्था — अब तक हम ग्रामीण समस्याओं पर विचार कर रहे थे अब शहरों पर भी विचार करते हैं । शहरों में मोटे तौर पर तीन तरह के लोग बसते हैं—(१) उच्च आय के परिवार (२) खाते-पीते परिवार जो गरीबी रेखा से ऊपर हैं, (३) गरीबी रेखा से नीचे और झुग्गी झोपड़ी वाले परिवार । इन सबकी समस्याएँ अलग-अलग तरह की हैं ।

(१) उच्च आय वाले लोग :—ये नौकर, दायियाँ रख सकते हैं किन्तु फिर भी इन परिवारों के शिशु और वृद्ध समस्याओं से मुक्त नहीं हैं । कुछ माताएँ अपने बच्चों का पूरा सरोकार रखती हैं किन्तु अधिकतर पुरुष अपने काम में व्यवसाय और नौकरी में ऐसे लगे रहते हैं कि बच्चे और बुजुर्ग दोनों उपेक्षित हो जाते हैं । ये परिवार नर्सरी स्कूलों का उपयोग तो करते हैं किन्तु उससे पहले भी परवरिश की आवश्यकता है । संयुक्त परिवार हो तो वृद्ध बुजुर्ग सहयोग कर सकते हैं किन्तु यदि बूढ़े भारी पड़ने लगे तो कमाने वालों के लिये बवाल हो जाता है । अभी हमारे देश में वृद्धाश्रम की संस्कृति विकसित नहीं हुई है ।

(२) खाते-पीते परिवार :—ये नौकर और दायियाँ रखने में समर्थ नहीं हैं । यदि स्त्री-पुरुष दोनों काम करते हों तो बच्चे और बूढ़ों की समस्या विकट हो जाती है । यदि बेटे-बहू माता-पिता को देवी-देवता समझ कर संभालने और वृद्ध लोग छोटे बच्चों को भगवान का वरदान मानकर संभाल लें तो समस्या उतनी गंभीर नहीं बनती और संयुक्त परिवार की व्यवस्था में गृहस्थी चलती ही रहती है, नहीं तो बच्चों और बूढ़ों की दुर्गति तथा घर की असुरक्षा अत्यन्त बढ़ जाती ह । बच्चों की उपेक्षा हो जाती है ।

(३) **झुग्गी झोपड़ी वालों की समस्या**, गरीबी रेखा से नीचे वालों की समस्याएं और जटिल हैं उन्हें परिवार की परवरिश के साथ आर्थिक समस्याओं से भी जूझना पड़ता है । यदि संयुक्त परिवार हो तो युवक-युवतियाँ रोजगार में रहकर, काम करके कुछ समाधान बना भी लें । अन्यथा सबकी दुर्गति ही होती है।

अभी आर्थिक संक्रमण का जो समय चल रहा है उसमें गांव हो या शहर, धनी हो या निर्धन, सभी जगह संयुक्त परिवारों की अपनी उपयोगिता है ।

प्रो० उमाकान्त उपाध्याय की नवीनकृति प्रकाशित

'मातृभूमि वैभवम् पृथिवी सूक्त विमर्श'

मूल्य : १२५) रुपये मात्र

प्रकाशक : आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-६

ग्रन्थ सम्पादन तथा प्रवास विवरण

डॉ० भवानीलाल भारतीय

श्री महाराज के मौलिक जीवनचरित्र लेखन के अतिरिक्त मैंने दयानन्द साहित्य के कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का सम्पादन किया है। ऋषि दयानन्द के काशी में पौराणिक पण्डितों से किये गये प्रसिद्ध शास्त्रार्थ का शताब्दी समारोह १९६९ में मनाया गया। समारोह के सूत्रधार आर्यसमाज के तेजस्वी नेता स्व० प्रकाशवीर शास्त्री थे तथा उन्हें उत्तरप्रदेश के तत्कालीन आर्य मुख्यमंत्री चौधरी चरणसिंह का सहयोग प्राप्त था। १६ नवम्बर १८६९ मंगलवार के दिन हुए इस शास्त्रार्थ का प्रकाशन ग्रंन्थाकार कई बार हो चुका हैं। मैंने इस शताब्दी वर्ष में काशी शास्त्रार्थ का एक विशेष संस्करण तैयार किया। इसके परिशिष्ट भाग में शास्त्रार्थ विषयक विभिन्न समाचार पत्रों में छपे विवरण समाविष्ट किये गये तथा शास्त्रार्थ में उपस्थित संस्कृत के विद्वान् पं० सत्यव्रत सामश्रमी के संस्कृत पत्र 'प्रत्नकम्रनन्दिनी' में छपी शास्त्रार्थ विषयक First hand रिपोर्ट को यथावत् प्रकाशित किया गया था।

१९७० में मैं परोपकारिणी सभा का सदस्य एवं संयुक्त मंत्री मनोनीत हुआ। अब ऋषि के ग्रंथों के सुचारु प्रकाशन का दायित्व भी मेरे पास आया। फलतः ग्रंथ प्रकाशन का कार्य मेरी निगरानी में होने लगा। ऋषि के सारे ग्रंथ पाण्डुलिपि रूप में सभा के ग्रंथागार में सुरक्षित हैं। पता चला कि ऋषि ने ऋग्वेद के प्रारंभिक अंश (प्रथम मण्डल, तृतीय सूक्त के मंत्र चार तक) का त्रिविध विस्तृत भाष्य किया था। प्रथम सूक्त के सभी नौ मंत्रों का यह विशद भाष्य तो अब तक छपता रहा है। परन्तु मैंने उपर्युक्त (ऋ० १/३/४) बाईस मंत्रों के भाष्य का सम्पादन किया और १९७० में सभा ने पुस्तकाकार प्रकाशित किया। ऋषि दयानन्द रचित 'चतुर्वेद विषय सूची' (पाण्डुलिपि) की आर्य विद्वन्मण्डल में बहुत चर्चा थी। आचार्य विश्वश्रवाः आदि प्रायः इसकी चर्चा करते तथा इसे दयानन्द कृत संक्षिप्त वेद भाष्य के रूप में प्रख्यापित करते थे। वस्तुतः यह स्वामीजी की एक निजी डायरी थी, जिसमें उन्होंने चारों वेदों के सभी मंत्रों में वर्ण्य विषयों की एक सूची तैयार कर रखी थी। संभवतः वे इसी विषयसूची का उपयोग अपने वेद भाष्य लेखन में विषय निर्देशिका के रूप में करना चाहते थे। मैंने मूल प्रति के आधार पर इस ग्रंथ की प्रेस कापी तैयार की और १९७४ में प्रकाशित कराया। १९७५ का वर्ष आर्यसमाज की स्थापना का वर्ष था। परोपकारिणी सभा ने इस वर्ष में दयानंद सूक्ति संग्रह के रूप में मेरे द्वारा सम्पादित 'दयानन्द उवाच' शीर्षक एक लघु ग्रंथ प्रकाशित किया।

इसी वर्ष सभा के संरक्षित कागजों में सभा के लिपिक राधावल्लभ शर्मा को श्री महाराज की स्वलिखित आत्मकथा के हस्तलेख (तीन किस्तों में) के चार मूल पन्ने (हाथी छाप के पतले पन्ने) मिले, जिन पर दो किस्तों की सामग्री लेखक (लिपिक) द्वारा लिखी तथा ऋषि द्वारा संशोधित और स्वहस्ताक्षरों से युक्त, अंकित थी। यह एक महती उपलब्धि थी। इसलिए मैंने इसे सम्पादित किया और मूल पत्रों की फोटो प्रति के साथ इसे इसी वर्ष में प्रकाशित किया। साथ में इसका अंग्रेजी अनुवाद तथा सम्पादकीय भी दिया। यह अनुवाद 'दि थियोसोफिस्ट' पत्र में छपा था तथा इसकी अनेकत्र

ग्रंथाकार प्रकाशन भी हुआ है । ऋषि दयानंद के पूना में दिये गये तथा मूल मराठी में लिखे गये पन्द्रह प्रवचनों के हिन्दी अनुवाद यों तो अनेक प्रकाशकों द्वारा छपे थे किन्तु परोपकारिणी सभा ने अब तक इन व्याख्यानों का प्रकाशन नहीं किया था । इस तथ्य को लक्ष्य में रखकर मैंने पूना प्रवचनों (उपदेश मंजरी) का एक सम्पादित संस्करण तैयार किया जो इन व्याख्यानों के विशद विश्लेषण के साथ १९७६ में प्रकाशित हुआ । १९८५ में इसे दूसरी बार छपाया गया । आगे सभा ने इसे प्रकाशित नहीं किया। १९९१ में सभा ने मेरा एक अन्य ग्रंथ 'दयानन्द सूक्ति मुक्तावली' प्रकाशित किया । इसमें वेद भाष्य तथा वेदांग प्रकाश को छोड़कर ऋषि के अन्य सभी ग्रंथों की मननीय और चिन्तनीय सूक्तियों एवं प्रेरक वाक्यों का संग्रह किया गया है । अब यह पुनः प्रकाशित हुआ है ।

ऋषिवर ने अपन जीवन काल में पौराणिकों, जैनियों, ईसाईयों तथा इस्लाम मतानुयायियों से पचासों शास्त्रार्थ किये थे । इनमें से अनेक ग्रंथाकार प्रकाशित हुए हैं । पं० युधिष्ठिर मीमांसक जी की प्रेरणा से मैंने इन सभी उपलब्ध शास्त्रार्थों का सम्पादन किया और प्रत्येक शास्त्रार्थ के मूल पाठ को सटिप्पण प्रकाशित किया । साथ ही उस शास्त्रार्थ का ऐतिहासिक विवरण भी दिया । इस प्रकार यह ग्रंथ महाराज के शास्त्रार्थों का प्रामाणिक पाठ व विवरण प्रस्तुत करता है । इसे श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट ने १९७४ में प्रकाशित किया । पुनः १९८२ में इसे उक्त ट्रस्ट ने छपाया । इसमें पं० युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा सम्पादित पूना प्रवचनों को भी सम्मिलित किया गया । अतः सम्पादकों का सम्मिलित नाम 'मीमांसक एवं भारतीय' साथ-साथ दिया गया । वर्षों से यह प्रामाणिक शास्त्रार्थ विवरण नवीन संस्करण की प्रतीक्षा में हैं ।

आर्य साहित्य के विश्रुत प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली ने मेरे द्वारा सम्पादित (ऋषि के प्रथम संस्कृत ग्रंथ) भागवत खण्डनम् को १९९९ में प्रकाशित किया । ध्यान रहे कि ऋषि के वैष्णव भागवत के खण्डन में लिखे गये इस लघु ग्रंथ को पं० युधिष्ठिर मीमांसक ने तलाश कर प्रकाशित किया था । शास्त्र लेखन की पुरातन प्रणाली का अनुसरण करने वाला यह ग्रंथ लेखक की अपूर्व धरोहर है । इसी प्रकाशक ने २००४ में मेरे द्वारा सम्पादित ऋषि दयानन्द की आत्मकथा का परिवर्द्धित संस्करण प्रकाशित किया । सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास की विस्तृत व्याख्या—भारतवर्षीय मत-मतान्तर समीक्षा मैंने लिखी है ।

स्वामी दयानन्द के प्रवास प्रसंगों का प्रकाशन :–

लाला रामगोपालजी के सौजन्य से मुझे कर्णवास (बुलन्द शहर) में ऋषि के अनेक बार के निवास काल का आंखों देखा हाल (तत्कालीन ठाकुर शेर सिंह द्वारा लिखित) मिला । यह उक्त ठाकुर साहब के पौत्र ठा० गवेन्द्रसिंह ने लिपिबद्ध किया है । दयानन्द जीवन में कर्णवास का विशेष महत्त्व है । इस ऐतिहासिक विवरण को जनज्ञान प्रकाशन दिल्ली (पं० भारतेन्द्रनाथ संचालित) ने १९७५ में प्रकाशित किया । २००१ में कर्णवास में स्थापित दयानन्द स्मारक ने इसे दुबारा प्रकाशित किया । इसमें अलीगढ़ के आर्य विद्वान् पं० देवनारायण भारद्वाज की प्रेरणा थी । कालान्तर में विभिन्न नगरों-स्थानों में स्वामी जी के प्रवास विवरण लिखने का अवसर मिला । यह एक स्वतंत्र विधा बनी ।

महर्षि दयानन्द स्मृति न्यास, जोधपुर की प्रेरणा से जोधपुर में महाराज के साढ़ चार मास का विवरण लिखा । इसे १९९० में उक्त न्यास ने प्रकाशित किया । जोधपुर की राजमाता श्रीमती कृष्णाकुमारी ने इसका भव्य लोकार्पण किया । जब १९९२ में उदयपुर के गुलाब बाग में स्थित राजकीय नवलखा महल आर्यसमाज को दयानन्द का स्मारक होने के कारण प्रदान किया गया तो इस स्मृति भवन

के ट्रस्ट के प्रधान सेठ हनुमान प्रसाद चौधरी (बाद में स्वामी तत्त्वबोध) ने स्वामीजी के उदयपुर प्रवास का विवरण लिखने के लिए मुझे आदिष्ट किया । फलतः 'ऋषि दयानन्द का उदयपुर प्रवास' लिखा गया और १९९५ में उक्त ट्रस्ट ने सचित्र प्रकाशित किया । हालैण्ड के आर्यसमाज ने इसका नीदरलैण्ड संस्करण १९९६ में एमस्टरडम में प्रकाशित किया ।

चण्डीगढ़ रहते समय मैंने काशी में स्वामी जी के सात बार के प्रवासों का विवरण स्व० डॉ० आनन्द प्रकाश आर्य (बी० एच० यू० में प्रोफेसर) के अनुरोध से लिखा था । उक्त डॉ० आर्य के निधन के कारण इसका प्रकाशन नहीं हो सका । अन्ततः डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री की प्रेरणा से इस महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का प्रकाशन आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी ने १९९८ में किया ।

प्रवास विवरण का यह सिलसिला आगे भी चलता रहा । आर्य परिवार संस्था, वडोदरा ने रतनजी भाई वेलाणी की प्रेरणा से 'दयानन्द का वडोदरा प्रवास' लिखाया जो २००० में छपा । इसी वर्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महाराज का दिल्ली प्रवास छपाया तथा अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई ने स्वामी जी के मुम्बई प्रवास का सचित्र ग्रंथ लिखवाया और इसे २००१ में प्रकाशित किया । २००२ में आर्य समाज पिम्परी पुणे ने मेरे दौहित्र श्री कुन्दन प्रकाश के आर्थिक सहयोग से ऋषि दयानन्द के पुणे प्रवास का प्रकाशन किया । बुलन्दशहर जिले में स्वामी जी के प्रवास का विवरण म० दयानन्द सेवा संस्थान, बुलन्दशहर ने प्रकाशित किया । आगे के वर्षों में स्वामी दयानन्द का लखनऊ प्रवास (डा० रूपचंद दीपक की प्रेरणा से) आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ ने छपाया । तदनन्तर रुड़की (उत्तराखण्ड) की आर्यसमाज ने ऋषि के रुड़की प्रवास तथा सहारनपुर जिले की खेड़ा अफगान आर्यसमाज के प्रधान म० आदित्यप्रकाश आर्य ने स्वामी दयानन्द के हरिद्वार एवं सहारनपुर प्रवास के इतिवृत्त ग्रन्थाकार प्रकाशित कराये ।

३/५ शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर (राज०)

शेषांश पृष्ठ २ का

राजा तेजनारायण सिंह और देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय कृत स्वामीजी का जीवनचरित्र :-स्वामी दयानन्द एक ही बार कलकत्ता आये थे और लगभग चार मास रहकर चले गये थे । फिर बंगाल की दूसरी यात्रा उन्होंने की ही नहीं । इन चार महीनों के कलकत्ता प्रवास का कई प्रकार से ऐतिहासिक महत्त्व है । यहां के प्रबुद्ध वर्ग पर उनके विचारों का अच्छा प्रभाव पड़ा था । बंगाल के विद्वत्समाज में सामाजिक और साहित्यिक चेतना बहुत पहले से रही है । ऋषि के आरम्भिक जीवनचरित्रों में श्री नगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्यायकृत स्वामी दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी सन् १८८६ ई० में प्रकाशित हुई थी । फिर श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय स्वामी दयानन्द के जीवन की ओर आकृष्ट हुए । श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय धर्म की दृष्टि से ब्राह्मसमाजी थे, किन्तु स्वामी दयानन्द के अद्भुत भक्त थे । स्वामी दयानन्द की जीवनी लिखने से पूर्व उन्होंने सेन्टपॉल की जीवनी लिखकर जीवनचरित्र लेखन-कला की दृष्टि से अच्छा यश प्राप्त किया था । श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने स्वामी दयानन्दजी का जीवनचरित्र बंगला भाषा में दो खण्डों में प्रकाशित किया । यह सन् १८९८ ई० में प्रकाशित हुआ था । राजा तेजनारायण सिंह आर्यसमाज कलकत्ता के संस्थापक प्रधान थे और उन्होंने देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय को आर्थिक सहायता प्रदान की । यद्यपि यह देवेन्द्रनाथजी के अन्वेषण एवं परिश्रम का पारिश्रमिक न था, किन्तु उस सहायता से देवेन्द्रनाथजी के कार्य में निश्चित ही सुविधा आयी थी । देवेन्द्रनाथजी ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में उन स्थलों को जाकर देखा और लोगों से सम्पर्क कर ऋषि के जीवन की सामग्री एकत्र की । यद्यपि अपनी एकत्र की हुई सामग्री को विधिवत् जीवनचरित्र का स्वरूप देने से पूर्व श्री देवेन्द्रनाथजी का देहान्त हो गया, और यह कार्य मेरठ के प्रसिद्ध विद्वान् श्री घासीरामजी ने किया। यहाँ हमारा इतना ही आशय है कि आर्यसमाज कलकत्ता के आर्यगण ऋषि जीवन के प्रकाशन में रुचि भी रखते थे और सहयोगी भी बने थे । **(आर्य समाज कलकत्ता के शत वर्षीय इतिहास से)**

शिवभक्तो ! कुछ सोचें !!!..........

–आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा

शिवरात्रि पर्व का अनुष्ठान करते-करते कई शताब्दियाँ बीत गई, पर इस अनुष्ठान के धूमधाम में यत्किञ्चित् भी व्यवधान व बाधा नहीं है । अनुष्ठान जैसे पहले होता था, वैसे आज भी है, कुछ अधिक ही है, न्यून का तो प्रश्न ही नहीं । भक्तगण शिवरात्रि का अनुष्ठान प्रतिवर्ष अति श्रद्धा, निष्ठा के साथ करते हैं । इस अनुष्ठान के अभीष्ट देव **शिव** हैं । इन अभीष्ट देव शिव को देश, प्रान्त के भेद से अनेक विभिन्न सम्बोधनों से सम्बोधित किया जाता है । ये **शिवजी काशी में बाबा विश्वनाथ** नाम से सम्बोधित हैं, तो **उज्जैन में महाकालेश्वर ।** यह **महाकालेश्वर** नाम **शिव** का बहुत प्रतिष्ठित नाम है । इस प्रतिष्ठित महाकालेश्वर सम्बोधन की विशेषता में एक गर्वमयी लोकोक्ति प्रसिद्ध है–

काल उसका क्या करे ? जो भक्त हो महाकाल ।।

काल शब्द का अर्थ है **काला रंग, समय, संहारक नियम आदि । महाकालेश्वर** का अर्थ है–**महांश्चासौ कालश्चेति महाकालः, महाकालश्चासौ ईश्वरचेति महाकालेश्वरः,** अर्थात् **कालों का काल ईश्वर ।** इस प्रकार लोकोक्ति का तात्पर्य हुआ महाकालेश्वर वह है, जो शत्रु, मृत्यु आदि को दूर कर भक्तों की रक्षा करता है, उनका कल्याण करता है ।

उज्जैन के इस **महाकालेश्वर** की यह भी विशेषता है कि उनकी आराधना जहाँ बिल्व पत्र, गुलाब पुष्प, चावल, चन्दन, रोली, मौली, गुड़, दुग्ध आदि द्रव्यों से होती है, वहीं **श्मशान से लाई गई ताजी भस्म से भी होती है ।** इस आराधना को **'भस्म आरती'** कहा जाता है । शिव महाकालेश्वर का यह भस्म आरती आराधना प्रातः ५ बजे होता है । श्मशान से भस्म लाने का कार्य व भस्म आरती करने का कार्य नरमुण्डधारी औघड़ का होता है । भस्म आरती के समय यजमान की पत्नी को वहाँ खड़े होने का अधिकार नहीं होता । मात्र यजमान, पुजारीगण एवं भस्म लाने वाला औघड़ वहाँ रहते हैं । वर्तमान में पुजारीगण ही भस्म आरती करते हैं, औघड़ एक तरफ खड़ा रहता है । भस्म आरती का यह तरीका है कि श्मशान से लाई गई लगभग ५–६ किलो भस्म वस्त्र में रखकर, वस्त्र की पोटली सी बनाकर शिवलिंग पर वह भस्म तब तक झाड़ी जाती है, जब तक पूरी की पूरी भस्म शिवलिंग पर न छन जाये । भस्म आरती करने से पूर्व शिवलिंग को खूब धोया, मांजा जाता हैं । चन्दन, रोली आदि से त्रिनेत्र आदि बनाये जाते है, पुष्प आदि भी चढ़ा दिये जाते हैं ।

उज्जैन के मन्दिर में स्थित महाकालेश्वर को देखने के सन् २००४ से लेकर अब तक कई अवसर आये हैं । एक बार पुनः इसी गत ५ नवम्बर २०१२ को भी महाकालेश्वर देखने का अवसर बन गया । **उज्जैन** स्थित **'महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेद विद्या प्रतिष्ठान'** द्वारा ४,५,६,७ नवम्बर २०१२ को

'द्वितीय विश्व वेद सम्मेलन' का आयोजन किया गया । जिसमें अनेकों वेदविदों ने भाग लिया, मैंने भी अपनी विशिष्ट भागीदारी निभायी । उज्जैन के स्थानीय महाकालेश्वर के भक्तों तथा वेद सम्मेलन में पधारे भक्तों ने महाकालेश्वर की प्रशंसा के खूब पुल बाँधे । इतने दूर से आकर महाकालेश्वर को नहीं देखा, तो कुछ नहीं देखा, महाकालेश्वर को देखना अति कल्याणकारी है । एतादृश सबके आग्रह, अनुग्रह के कारण निरर्थक होते हुये भी ५ नवम्बर २०१२ को महाकालेश्वर स्थल में मुझे जाना ही पड़ा। पुनः रात्रि को **'महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेद विद्या प्रतिष्ठान'** परिसर के कार्यक्रम स्थल पर सी.डी. द्वारा 'भस्म आरती का दृश्य भी सबने देखा । मन्दिर में तो भस्म आरती का दृश्य नारी जगत् नहीं देख सकता।'

उज्जैन के इस महाकालेश्वर को **महाकवि कालिदास** ने **अप्यन्यस्मिञ्जलधर ! महाकालमासाद्य काले,** मेघ० १/३४, **असौ महाकालनिकेतनस्य वसन्नदूरे किल चन्द्रमौलेः**, रघु० ६/३४, आदि प्रसंगों में मेघदूत व रघुवंश आदि ग्रन्थों के माध्यम से खूब अमर बनाया है ।

महाकालेश्वर की इस सीरियल भस्म आरती को देखकर मेरा मन तो बुझ ही गया, ईश्वर के स्वरूप विषयक विचार भी चक्र प्रतिचक्र करने लगे । जिस शिव महाकालेश्वर की आराधना, उपासना दुःखों से छूटने के लिए की जाती है, जिसके अकाय, निराकार, सर्वव्यापक, चेतन, सच्चिदानन्द आदि विशेषण होते हैं, उसके साथ यह कैसी अशिष्टता=बदसलूकी है ? ईश्वर की कृपा, ईश्वर का सानिध्य आदि राख छानने से मिलती है, तब तो उदर भरने के लिए चूल्हे में जलायी गई अग्नि की भस्म को छानने वाले उनकी अपेक्षा अति भाग्यशाली ही होंगे ! जो दिन में ३—४ बार चूल्हे में अग्नि जलाते हैं और उसकी भस्म को इधर उधर उठाते रखते हैं ।

शिवभक्तो ! कुछ सोचें ! अभी भी समय है ! अनादि निराकार शिव ईश्वर की प्राप्ति न भस्म आरती से होती है, न अन्य पत्र, पुष्प आदि के समर्पण से होती है । उस जगन्नियन्ता परमात्मा शिव की प्राप्ति तो उसके प्रमुख नाम **ओ३म**—प्रणव जप चित्त की एकाग्रता तथा शास्त्र के स्वाध्याय से होती है । **योगदर्शन** के भाष्यकार व्यास कहते हैं—

तदस्य योगिनः प्रणवं जपतः प्रणवार्थं च भावयतश्चित्तमेकाग्रं संपद्यते । तथा चोक्तम्—

स्वाध्यायाद्योगमासीत् योगात् स्वाध्यायमामनेत् ।

स्वाध्याययोगसम्पत्या परमात्मा प्रकाशते ।। व्या० भा० योग० १/२८ ।।

अर्थात् उस ईश्वर से योग करने वाले जन का ओंकार जपते हुए और ओंकार के रक्षक आदि रूप अर्थ का अनुभव करते हुये चित्त एकाग्र हो जाता है । जैसा कि कहा है—**स्वाध्यायात**=पवित्र ओ३म् के जप करने तथा मोक्ष का उपदेश करने वाले वाले शास्त्रों के पढ़ने से **(स्वाध्यायः प्रणवादिपवित्राणां जपो मोक्षशास्त्राध्ययनं वा,** व्या० भा० योग० २/१),**योगम् आसीत**=चित्तवृत्ति का निरोध करके उपासना करे **(योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः**, योग० १/२), एवं **योगात्**=चित्तवृत्ति के निरोध से, **स्वाध्यायम्**=

ओ३म् के जप का, **आमनेत्**=अभ्यास करे **(म्ना भ्यासे)** । **स्वाध्याययोगसम्पत्या**=इस ओ३म् जप तथा चित्तवृत्ति की **सम्पत्ति**=सिद्धि से, **परमात्मा प्रकाशते**=परमात्मा का प्रकाश होता है ।

व्यास वचन से स्पष्ट है जिसके शिव, ओ३म् आदि नाम है, वह ईश्वर तो प्रणव जाप, मोक्ष का उपदेश करने वाले शास्त्रों के पढ़ने-पढ़ाने एवं मन की एकाग्रता से प्राप्त होता है । जो जन ईश्वर की प्राप्ति के लिए मूर्ति आदि का आश्रय लेते हैं और मूर्तिपूजा को मन के एकाग्र करने का साधन बताते हैं, वे महती भ्रान्ति में हैं । मूर्तिपूजा से मन एकाग्र हो जाता है, यह मात्र उनकी मिथ्या अवधारणा है । व्यास ने तो मन के एकाग्र करने का साधन प्रणव जाप एवं प्रणव के रक्षा आदि अर्थ स्वरूप चिन्तन को बताया है ।

परमात्मा के अनुग्रह, कृपा की प्राप्ति के लिए नम्रता, उदारता आदि गुणों को धारण करना भी आवश्यक होता है । इन गुणों से ईश्वर की जहाँ कृपा प्राप्त होती है, वहीं दुःखों के बन्धन भी टूट जाते हैं । वेद में कहा है—

मन्त्रमखर्व सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा ।

पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत् ।। ऋ० ७/३२/१३ ।।

अर्थात् **अखर्व सुधितम्**=अभिमान रहित **(खर्व दर्पे)**, हितकारी, विनम्र, **सुपेशसं मन्त्रम्**=शोभनीय विचार को, **यज्ञियेषु आ दधात**=जीवन के समस्त उत्तम कार्यों में समर्पित करें, यतोहि, **यः कर्मणा**=जो इन यज्ञिय श्रेष्ठकर्मों से, **इन्द्रे भुवत्**=ऐश्वर्यशाली परमात्मा में स्थित होता है, **तं पूर्वीश्चन प्रसितयः**=ऐसे व्यक्ति को पुराने बन्धन, दुःख, बेड़ियाँ **(षिञ् भन्धन)**, **तरन्ति**=छोड़ देती हैं ।

मन्त्र का भाव है जो उदारता, नम्रता, निष्कपटता का व्यवहार करता है, उसे ही परमात्मा की समीपता, सायुज्यता की प्राप्ति होती है । परमात्मा की समीपता को प्राप्त व्यक्ति के दुःख, बन्धन, कष्ट, विपत्ति छूट जाते है व टूट जाते हैं । निरभिमानता व परमात्मा की समीपता के बिना दुःख, कष्ट, विपत्ति आदि नहीं छूटते ।

शिव परमात्मा उनके ही कष्टों, दुःखों, बन्धनों, विपत्तियों आदि को दूर करते हैं, जो निरभिमान होकर शिव परमात्मा से समीपता बनाये रखते हैं । कणाद कहते हैं—

आत्मकर्मसु मोक्षो व्याख्यातः । वैशे० ६/२/१७

अर्थात् **आत्मकर्मसु**=उपासना आदि अध्यात्म कर्मों के करने पर मोक्ष कहा गया है ।

वचन का तात्पर्य स्पष्ट है कि दुःख, विपत्ति आदि से छूटने के लिये **अध्यात्म कर्म**=आत्मा द्वारा किये जाने वाले उपासना, वैराग्य आदि कर्म ही बहुत बड़े साधन हैं, दुःखादि निवृति के उपयुक्त उपाय हैं, पत्थर=पाषाण पूजन अर्चन नहीं ।

कई शताब्दियों के पश्चात् वेद, दर्शन आदि शास्त्रों में विहित ईश्वर प्राप्ति के उपायों को जानने का **फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की शिवरात्रि** को सर्वप्रथम संकल्प **महर्षि दयानन्द** ने ही लिया । परम्परा

से चली आ रही मूर्त्तिपूजा रूप ईशार्चन पद्धति को उन्होंने एक झटके में उच्छिन्न कर दिया । अपने ज्ञान, तप, साधना के द्वारा ईश्वर उपासना की उचित विधि ढूँढ़ निकाली । **महर्षि दयानन्द** ने उस **परब्रह्म ईश्वर की उपासना विधि** का प्रतिपादन **सत्यार्थ प्रकाश** के **नवम समुल्लास** में किया है । उस **उपासना विधि के अन्नमय, प्राणमय, मनोमन, विज्ञानमय, आनन्दमय पञ्चकोशों का विवेचन, वैराग्य=विवेक से सत्यासत्य का जानना, शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान यह षट्क सम्पत्ति, श्रवण, मनन, निदिध्यासन, साक्षात्कार ये श्रवण चतुष्टय आदि प्रमुख साधन हैं ।**

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट उपासना के इन साधनों को अपनाने पर असत्य, अज्ञान, अन्धकार, अधर्म आदि दूर हो जाते हैं, सत्य, धर्म, ज्ञान, यथार्थ आदि जीवन के अंग बन जाते हैं । परमेश्वर का उपासक शान्त, दान्त, आनन्द युक्त होता है, सच्चरित्र बनता है ।

आज **चरित्र भ्रष्टता** सर्वत्र विद्यमान है । **चरित्र भ्रष्ट** होने के जहाँ अन्य कारण हैं, उनमें **साकार पूजा** भी बहुत बड़ा कारण है । **महर्षि दयानन्द ने ईश्वर की साकार पूजा के १६ दोष गिनाये हैं,** उनमें चरित्र भ्रष्टता को भी गिनाया है । वे लिखते हैं—

पहला—साकार में मन स्थिर कभी नहीं हो सकता, क्योंकि उस साकार को मन झट ग्रहण करके उसी के एक एक अवयव में घूमता और दूसरे में दौड़ जाता है । और निराकार अनन्त परमात्मा के ग्रहण में यावत्सामर्थ्य मन अत्यन्त दौड़ता है, तो भी अन्त नहीं पाता । निरवयव होने से चंचल भी नहीं रहता, किन्तु उसी के गुण, कर्म, स्वभाव का विचार करता करता आनन्द में मग्न होकर स्थिर हो जाता है । और जो साकार में स्थिर होता तो सब जगत् का मन स्थिर हो जाता, क्योंकि जगत् में मनुष्य, स्त्री, पुत्र, धन, मित्र आदि साकार में फँसा रहता है, परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता, जब तक निराकार में न लगावे, क्योंकि निरवयव होने से उसमें मन स्थिर हो जाता है । इसलिए मूर्त्तिपूजा करना अधर्म है।

दूसरा—उसमें करोड़ों रुपये मन्दिरों में व्यय करके दरिद्र होते हैं और उसमें प्रमाद होता है ।

तीसरा—स्त्री पुरुषों का मन्दिरों में मेला होने से व्यभिचार, लड़ाई, बखेड़ा और रोगादि उत्पन्न होते हैं ।

चौथा—उसी को धर्म, अर्थ, काम और मुक्ति का साधन मानके पुरुषार्थ रहित होकर मनुष्य जन्म व्यर्थ गमाता है ।

पांचवा—नाना प्रकार की विरुद्धस्वरूप नाम, चरित्रयुक्त मूर्त्तियों के पुजारियों का ऐक्यमत नष्ट होके विरुद्ध मत में चल कर आपस में फूट बढ़ाके देश का नाश करते हैं ।

छठा—उसी के भरोसे में शत्रु का पराजय और अपना विजय मान, बैठे रहते हैं । उनका पराजय होकर राज्य, स्वातन्त्र्य और धन का सुख उनके शत्रुओं के स्वाधीन होता है और आप पराधीन भटियारे के टट्टू और कुम्हार के गदहे के समान शत्रुओं के वश में होकर अनेकविधि दुःख पाते हैं ।

सातवां–जब कोई किसी को कहे कि हम तेरे बैठने के आसन वा नाम पर पत्थर धरें तो जैसे वह उस पर क्रोधित होकर मारता वा गाली प्रदान कर देता है, वैसे ही जो परमेश्वर के उपासना के स्थान हृदय और नाम पर पाषाणादि मूर्त्तियाँ धरते हैं उन दुष्टबुद्धिवालों का सत्यानाश परमेश्वर क्यों न करे?

आठवां–भ्रांत होकर मन्दिर मन्दिर देश देशान्तर में घूमते घूमते दुःख पाते, धर्म संसार और परमार्थ का काम नष्ट करते, चोर आदि से पीड़ित होते, ठगों से ठगाते रहते है ?

नववां–दुष्ट पुजारियों को धन देते हैं, वे उस धन को वेश्या, परस्त्रीगमन, मद्य, मांसाहार, लड़ाई, बखेड़ों में व्यय करते हैं, जिससे दाता का सुख का मूल नष्ट होकर दुःख होता है ।

दशवां–माता पिता आदि मानवीयों का अपमान कर पाषाणादि मूर्त्तियों का मान करके कृतघ्न हो जाते हैं ।

ग्यारहवां–उन मूर्त्तियों को कोई तोड़ डालता वा चोर ले जाता है, तब हा हा करके रोते रहते हैं ।

बारहवां–पुजारी परस्त्रियों के संग और पुजारिन पर पुरुषों के संग से प्रायः दूषित होकर स्त्री पुरुष के प्रेम केआनन्द को हाथ से खो बैठते हैं ।

तेरहवां–स्वामी सेवक की आज्ञा का पालन यथावत् न होने से परस्पर विरुद्धभाव होकर नष्ट भ्रष्ट हो जाते है ।

चौदहवां–जड़ का ध्यान करने वाले का आत्मा भी जड़ बुद्धि हो जाता है, क्योंकि ध्येय का जड़त्व धर्म अन्तःकरण द्वारा आत्मा में अवश्य आता है ।

पन्द्रहवां–परमेश्वर ने सुगन्ध्यियुक्त पुष्पादि पदार्थ वायु, जल के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिए बनाये हैं, उनको पुजारी जी तोड़ताड़ कर, न जाने उन पुष्पों की कितने दिन तक सुगन्धि आकाश में चढ़कर वायु, जल की शुद्धि करता और पूर्ण सुगन्धि के समय तक उसका सुगन्ध होता, उसका नाश मध्य में ही कर देते हैं । पुष्पादि कीच के साथ मिल सड़ कर उलटा दुर्गन्ध उत्पन्न करते हैं । क्या परमात्मा ने पत्थर पर चढ़ाने के लिए पुष्पादि सुगन्धियुक्त पदार्थ रचे हैं ?

सोलहवा-पत्थर पर चढ़े हुये पुष्प, चन्दन और अक्षत आदि सब का जल और मृत्तिका के संयोग होने से मोरी वा कुण्ड में आकर सड़ के इतना उससे दुर्गन्ध आकाश में चढ़ता है कि जितना मनुष्य के मल का । और सहस्रों जीव उसमें पड़ते उसी में मरते और सड़ते हैं । ऐसे ऐसे अनेक मूर्त्तिपूजा के करने में दोष आते हैं । इसलिये सर्वथा पाषाणादि मूर्त्तिपूजा सज्जन लोगों को त्यक्तव्य है । और जिन्होंने पाषाणमय मूर्त्ति की पूजा की है, करते हैं और करेंगे, वे पूर्वोक्त दोषों से न बचे, न बचते हैं और न बचेंगे । सत्या० एका० पृ० २९७–२९८ ॥

इस प्रकार **महर्षि दयानन्द** ने **निराकार ईश्वर** का सन्देश देकर शिवरात्रि भक्तों का अहोभाग्य जगाया है । ईश्वर भक्ति का सही मार्ग दिखाया है । चरित्र निर्माण की उत्तम शिक्षा दी है । **१. मन की**

अस्थिरता, मूर्त्तिपूजारूप अधर्म, २. दरिद्रता, प्रमाद, ३. व्यभिचार, ४. पुरुषार्थ रहित मनुष्यजन्म की निरर्थकता, ५. आपसी फूट, विरोध, ६. पराधीनता, ७. ईश्वर के दण्डरूप सत्यानाश, ८. भ्रान्तिदु:ख, धर्मादि व परमार्थ का नाश, ठगाना, ९. परस्त्रीगमन, मद्य, मांसाहार, १०. माता, पिता के प्रति कृतघ्नता, ११. मूर्त्ति भग्नता व चोरी पर रुदन, १२. पुजारी जनों के परस्त्रीपुरूषों के परस्पर संयोग से आनन्द का खोना, १३. स्वामी सेवक के परस्पर विरुद्ध होके नष्ट होना, १४. आत्मा पर जड़त्व धर्म का अवश्य आना, १५. पुष्पादि की सड़न से दुर्गन्ध उत्पन्न करना, १६. पुष्प, चन्दन, अक्षत आदि में जल, मृत्तिका के संयोग द्वारा उठी दुर्गन्ध से आकाश को दूषित करना, मूर्त्तिपूजा के इन १६ दु:खों से बचाया है।

कल्याणकारी, शिव, निराकार ईश्वर की कृपा चाहने वाले जनों को **महर्षि दयानन्द** के इन सन्देशों का अनुगमन करना अति आवश्यक है। इस अनुगमन से स्वतः उनका व देश का कल्याण ही नहीं, बहुकल्याण होगा। **कल्पित महाकालेश्वर कल्याण करे या न करे ! पर कालों का काल निराकार ईश्वर अवश्य कल्याण करता है। ईश्वर की आराधना के रूप में 'भस्म आरती' आदि निरर्थक कार्यों को छोड़ें, कालों के काल ईश्वर शिव के बहुकल्याण को प्राप्त करें।**

प्राचार्या–पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी–१०

दूरभाष-०९६८०६७४७८९

आर्य संसार के सम्बन्ध में घोषणा

फार्म - IV

प्रेस तथा पुस्तक पंजीयन अधिनियम १८६७ (१९५६ में संशोधन धारा १९डी०) के अन्तर्गत अपेक्षित आर्य संसार नामक पत्रिका से संबंधित और अन्य बातों का विवरण प्रकाशित किया जाता है।

१. प्रकाशन स्थान	आर्य समाज कलकत्ता १९, विधान सरणी, कोलकाता-७००००६
२. प्रकाशन अवधि	मासिक
३. प्रकाशक का नाम और राष्ट्रीयता	उमाकान्त उपाध्याय, भारतीय
४. सम्पादक का नाम और पता	उमाकान्त उपाध्याय, भारतीय १९, विधान सरणी, कोलकाता-७००००६
५. मुद्रक का नाम, राष्ट्रीयता और पता :	एसोशियेटेड आर्ट प्रिन्टर्स, भारतीय ७/२, बिडन रो, कोलकाता-६
६. पत्रिका के मालिक का पूरा नाम-पता :	आर्य समाज कलकत्ता १९, विधान सरणी, कोलकाता-७००००६

मैं उमाकान्त उपाध्याय, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपरोक्त विवरण सत्य है।

१५ मार्च २०१३
कोलकाता

उमाकान्त उपाध्याय
प्रकाशक

ओ३म्

चमकीला आवरण

– महात्मा ओम्मुनि

मनुष्य मात्र में जितने भी दोष उत्पन्न होत हैं वे सब सोने, चान्दी, हीरे—जवाहरात आदि चमकीली वस्तुओं की इच्छा और उनकी चकाचौंध के कारण होते हैं । चोर चोरी करता है, डाकू डाका डालता है, वेश्या व्यभिचार करती है, कर्मचारी रिश्वत लेता है या दुकानदार वस्तुओं में मिलावट करता है अथवा अधिक भाव में सामान बिक्री करता है, इन सब बुराइयों के मूल में चमकीली वस्तुओं की इच्छा ही होती है । ईशोपनिषद् की श्रुति है—

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ।।

इस श्रुति का भावार्थ यह है कि सत्य का मुख एक चमकदार वस्तु की कामना रूपी ढ़कने से ढ़का हुआ है । यदि तुम अपनी उन्नति, अपने विकास अथवा अपने उत्थान की कामना रखते हो तो इस चमकदार ढकने को हटा दो अर्थात् संसार की चमकीली—भड़कीली वस्तुओं की कामना मत करो । क्योंकि जब तक सत्य का ज्ञान न हो तब तक सत्य का आचरण भी नहीं हो सकता और जब तक सत्य का आचरण नहीं होगा तब तक मानव अपनी उन्नति अपना विकास नहीं कर सकता ।

इसका अभिप्राय यह हुआ कि जिस मनुष्य के मन में चमक—दमक या तड़क—भड़क वाली वस्तुओं की कामना है तब तक वह कभी भी सत्य और पवित्र आचरण वाला जीवन नहीं बिता सकता । इन वस्तुओं की इच्छा से लोभ और काम आदि विकार उत्पन्न होते हैं । लोभी और कामी मनुष्य किसी भी अवस्था में विश्वास के योग्य नहीं हो सकता । आज संसार में जितना अनाचार व दुराचार दृष्टिगोचर हो रहा है, इसके मूल में इन्हीं वस्तुओं की कामना मुख्य कारण है ।

एक बार एक राजा किसी रमणीय पर्वत की सैर करके अपने नगर को वापिस लौट रहा था । रास्ते में एक सुनसान स्थान पर एक वृक्ष के नीचे उसने एक साधु को बैठे देखा । उसके पास न कोई वस्त्र, न कोई पात्र, न कोई बिस्तर चारपाई और न कोई खाद्य सामग्री थी । वर्षा व धूप से बचने के लिए उसके पास झोंपड़ी भी नहीं थीं । साधु की यह दशा देखकर राजा ने सोचा—मेरे राज्य में ऐसे गरीब व्यक्ति भी हैं जिनके पास दैनिक उपयोग की वस्तुएं भी नहीं हैं, यह तो मेरे लिए कोई अच्छी बात नहीं है । राजा ने साधु की सहायता के लिए पचास रुपये एक सेवक के हाथों भेजे। किन्तु साधु ने यह कहते हुए रुपये लेने से मना कर दिया कि इन्हें किसी दीन को दे देना । सेवक ने वापिस आकर राजा से साधु की कही बात सुना दी । राजा ने सोचा कि शायद रुपये कम होने के कारण साधु ने नहीं लिये । राजा नें दोबारा सेवक को सौ रुपये देकर भेजा, किन्तु साधु ने इस बार भी यही उत्तर दिया । राजा ने पुनः पाँच सौ रुपये देकर भेजा, किन्तु साधु ने फिर भी वही बात दोहराई, किसी दीन को दे देना । राजा ने अब पांच हजार रुपये देकर सेवक को भेजा, किन्तु साधु का तो वही रटा-रटाया उत्तर था, इसे किसी दीन को दे देना ।

अब राजा से न रहा गया, वह स्वयं साधु के पास गया और आदरपूर्वक पूछा—हे साधु महाराज ! आपकी सहायता के लिए मैं बार-बार अधिक रुपये भेजता रहा किन्तु आपने उन्हें लेने के बजाय यह कहकर वापिस कर दिये कि किसी दीन को दे देना । साधु महाराज! आपके पास दैनिक उपयोग की कोई भी वस्तु नहीं, फिर आपसे बढ़कर दीन कौन होगा ? तब साधु ने कहा—हम तो राजा हैं, हमें क्या कमी है ।

साधु की बात सुनकर राजा ने आश्चर्य से पूछा कि—राजा के पास तो सेना होती है, महल—अटारी, किला और धन का खजाना होता है । किन्तु आपके पास तो फाका-मस्ती के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है । तब साधु ने कहा कि—राजा लोग सेना अन्य राजाओं के भय व अपनी सुरक्षा के लिए रखते हैं । हमें न किसी का भय है और न हमारा कोई शत्रु है । राजा अपने सैनिकों, सेवकों व महल में रानियों आदि के व्यय के लिए कोष रखता है । हमारा कोई व्यय नहीं है, फिर हम कोष क्यों रखें ? सुनो राजन् ! हमारे पास तो अनमोल रसायन है, जब चाहें उससे इच्छानुसार तांबे का सोना बना सकते हैं । साधु की यह बात सुनकर राजा वहाँ से चल पड़ा । रास्ते में उसने विचार किया कि अगर साधु रसायनी न होता तो इतना धन वापिस क्यों करता, अवश्य ही यह साधु रसायनी है । रात को सोते समय राजा को यह विचार फिर आया और उसने सोचा कि क्यों न साधु से कई मन सोना बनवा लिया जाये । तब मैं सेना का विस्तार करके अन्य राज्य को जीत सकता हूँ और अधिक शक्तिशाली राजा बन सकता हूँ । राजा ने उसी समय साधु के पास जाना ठीक समझा ताकि किसी को पता न लग सके। राजा उसी समय चुपचाप अकेला साधु के पास चल पड़ा । साधु के पास पहुँचा तो पाँव की आहट सुनकर साधु ने पूछा—कौन है ! राजा ने कहा—महाराज ! मैं आपका सेवक राजा हूँ । साधु ने पूछा—इस समय क्यों आये हो ? तब राजा ने अपने मन का सब हाल साधु से कह दिया और कहा कि आप हजार—दो हजार मन सोना बना दें । तब साधु ने राजा से पूछा कि—अब बता कि दीन तू है या मैं हूँ? मांगने तुम आये हो या मैं आया था ? यह सुनकर राजा ने विनम्र भाव से कहा—हां साधु महाराज, निःसन्देह दीन तो मैं ही हूँ । आप कृपा करके सोना बना दें ।

तब साधु ने कुछ सोचकर कहा—ठीक है, बना देंगे सोना, तुम हमारे पास प्रतिदिन आया करो । साधु के कहे अनुसार राजा प्रतिदिन साधु के पास आने लगा । साधु उसे प्रतिदिन तत्त्व ज्ञान का उपदेश करते रहे । इस प्रकार एक वर्ष बीत जाने के पश्चात् जब राजा तत्त्वज्ञान का विद्वान बन गया और उसकी सब सांसारिक वासनाएं नष्ट हो गई,तब साधु ने राजा से कहा—राजन् ! अब तुम जितना चाहो तांबा ले आओ, मैं सोना बना दूंगा । तब राजा ने हाथ जोड़कर विनम्रता पूर्वक कहा कि—हे गुरु महाराज ! वह तांबा तो अब कभी का सोना बन चुका है ।

वास्तव में तृष्णा और मोह-माया के वश हुआ मनुष्य अनित्य को नित्य बनाने हेतु अनगिनत पाप करता है । उस मनुष्य से अधिक मूर्ख कौन होगा जो धन के भरोसे परमात्मा के अटल नियमों को भुला देता है । नीति में कहा गया है कि—'विपत्ति के लिए धन एकत्र करना चाहिए । परन्तु जब विपत्ति आती है तो संचित धन भी नष्ट हो जाता है' किन्तु जो सच्चे ईश्वर भक्त ह वे किसी भी प्रकार की आपत्ति-विपत्ति से नहीं घबराते । क्योंकि वे जानते हैं कि परमात्मा के राज्य में आपत्ति या विपत्ति नाम की कोई वस्तु नहीं है । प्रभु जो भी करते हैं, अच्छा ही करते हैं । तत्त्वज्ञानी प्रभु भक्त जानते हैं कि धन की तृष्णा

से अधिक दु:खदायी कोई पदार्थ नहीं है । काला भयंकर सर्प भी स्पर्श से बहुत नर्म—मुलायम लगता है, किन्तु उसके काट लेने पर मृत्यु निश्चित है । इसी प्रकार सभी चमकीले पदार्थ बहुत मन भावन लगते हैं, परन्तु वास्तव में ये मानव को सत्य से दूर ले जाकर विनाश का कारण बनते हैं । परमात्मा ने आत्मा को इन्द्रियों, मन व शरीर का स्वामी बनाया है, न कि इनका दास बनकर सत्य धर्म से दूर होने के लिए। वेद श्रुति के माध्यम से प्रभु उपदेश दे रहे हैं कि चमकीली वस्तुओं के आवरण में सत्य का मुख छिपा हुआ है । यदि तुम आत्मिक बल की उन्नति और सत्यधर्म के ज्ञाता बनना चाहते हो तो सर्वप्रथम सत्य को ढकने वाले चमकीले आवरण को हटा दो, तभी तुम यथार्थ सत्य का साक्षात्कार कर पाओगे । भगवान् मनु के अनुसार लोभी व कामी पुरुष कभी धर्म के मर्म को नहीं जान सकता । किसी ने ठीक ही कहा है कि—

कामी, क्रोधी, लालची, इनसे न भक्ति होय ।
भक्ति करे कोई सूरमा, जाति-वर्ण, कुल खोय ।। इति ओम् शम् ।

—वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक (हरियाणा)

प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रेमी, देश की एकता व अखण्डता में विश्वास करने वाले श्रद्धालु सज्जनों से एक निवेदन

इस समय हमारा देश विदेशी सभ्यता संस्कृति की ओर तीव्र गति से बढ़ रहा है । नई पीढ़ी के युवक युवती प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की रक्षा की बात सुनना नहीं चाहतें, वे विदेशियत के रंग में रंगते जा रहे हैं । फलस्वरुप विदेशियत फल-फूल रहें हैं, वे येन केन प्रकारेण वैदिक शिक्षाएं जहां राम कृष्ण की संस्कृति की बात सुनकर चिढ़ जाते हैं ।

ऐसी विषम परिस्थिति में भी हमें वैदिक धर्म एवं प्राचीन संस्कृति की रक्षा करनी है विशेष कर पूर्वांचल के प्रान्तों में जहां कुछ श्रद्धालु सज्जन भारतीय संस्कृति से जुड़े रहना चाहते हैं, उनके बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करके उन्हें प्रोत्साहित करना है । आसाम में विद्यालय छात्रावास बनाने के लिए उनका भावना भरा आग्रह है ।

इसी प्रकार आसाम में डीम्पान्डु तथा लंका के निवासियों ने अपने ग्राम में विद्यालय खोलने का विशेष आग्रह किया है । वहां के बोडो जाति के निवासी जो भारतीय संस्कृति के प्रा।ा श्रद्धा रखते हैं, अपने आप को आर्य (हिन्दू धर्म) एवं देश से जुड़ा मानते हैं वे अपने बच्चों को ईसाईयों के स्कूल में पढ़ाना नहीं चाहते, वे विद्यालय बनाने एवं भविष्य में कुछ आय के लिए भूमि देने के लिए तैयार हैं, अतः वहां यथाशीघ्र विद्यालय की भवन बनाकार आगामी नये सत्र से विद्यालय चलाना है ।

इसी प्रकार गोलाघाट जिले के सरुपथार कस्बे में अखिल भारतीय दयानन्द सेवा आश्रम संघ दिल्ली की देख रेख में एक १२ वीं कक्षा तक का विद्यालय चल रहा है । परन्तु वहां छात्रावास नहीं है । इस विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र ईसाईयों के विद्यालय में रहते हैं । उस छात्रावास में रहने से छात्रों पर विदेशियत का प्रभाव पड़ता है । वहां यथा शीध्र छात्रावास बनाना है । इन दोनों स्थानों पर प्रारंभिक रुप से भवन आदि बनाने के लिए भी कम से कम २० लाख रुपये तत्काल चाहिए । क्योंकि यहां की अपेक्षा वहां महंगाई दो गुनी है । अतः देश-धर्म प्रेमी वैदिक संस्कृति की रक्षा करने के इच्छुक उदारमना देशभक्त सज्जनों से आग्रह है कि यथा शीध्र निम्न पते पर अधिक से अधिक सहयोग देकर अनुगृहीत करें । आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना के नाम से एस. बी. आई खाता नं.11276777048 खरियार रोड में भेजें । ध्यान रहे गुरुकुल को दिया दान पर आयकर की छूट है ।

—स्वामीधर्मानन्द सरस्वती, संचालक—गुरुकुल आश्रम आमसेना, व्हाया—खरियार रोड़ जिला नवापारा (उड़ीसा)

‘कर्म करने के अधिकार का हमें दुरुपयोग नहीं करना चाहिये’

– श्री हरिश्चन्द्र ‘वैदिक’

मनुष्य को इस संसार मे लाना तो कठिन है ही, पर उसे भला आदमी बनाना और भी कठिन है । वेद कहता है —‘उतिष्ठ स्वध्वरावानो देव्याधिया । दृशेचभाषावृहतासुशक्वनिराग्नेयहि सुशस्तिभिः ।। (यजु० ११, ४१) विद्वान् लोगों को चाहिये कि शुद्धविद्या और बुद्धि के दान से सब मनुष्यों की निरन्तर रक्षा करें क्योंकि अच्छी शिक्षा के बिना मनुष्यों के लिये और कोई भी आश्रय नहीं है । इसलिये सबको उचित है कि आलस्य और कपट आदि कुकर्मो को छोड़ के विद्या के प्रचार के लिये सदा प्रयत्न किया करें ।’

‘सत्यार्थ प्रकाश’ के शिक्षा विषय में ऋषि दयानन्द लिखे हैं कि–

‘मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषोवेदः ।। यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है । वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है । वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ा भाग्यवान, जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों । जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं ।’

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने एकबार कहा था कि ‘यदि कोई पढ़ा लिखा व्यक्ति चरित्रवान नहीहै तो क्या उसे पण्डित कहूँगा ? कभी नहीं, यदि अनपढ़ व्यक्ति ईमानदारी से काम करता है, ईश्वर में विश्वास रखता है और उससे प्रेम करता है तो मैं उसे महापण्डित मानने को तैयार हूँ ।’

मातृशक्ति के रूप में कर्म का सर्वोच्च रूप ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जी में देखने को मिलता है । उस समय भारत अंग्रेजों के अधीन था । ईश्वरचन्द्रविद्यासागर को योग्यता के कारण नौकरी मिल गई । माता जी की आज्ञा लेकर नौकरी पर चले गये । एक दिन उनके माता जी का पत्र मिला कि छोटे भाई का विवाह है, तत्काल गांव आ जांय । पत्र मिलते ही मालिक से छुट्टी मांगी, पर छुट्टी जब नहीं मिली तब वे नौकरी से त्याग पत्र दे दिये । गांव जाने में नदी पार करनी थी, कोई नाववाला नदी पार जाने को तैयार नहीं हुआ तो वे स्वयं उफनती हुई नदी में कूद पड़े और तैरकर पार हुए और अपने गांव पहुंचकर माता के चरणों में माथा रख दिये तथा आशीर्वाद प्राप्त किये । तभी तो कहा गया है ‘आचार हीनं न प्रनन्तिवेदा ।’ अर्थात् चाहे एक व्यक्ति सारे वेदों का ज्ञाता ही हो यदि उसका आचरण अच्छा नही है तो उसके जीवन में पवित्रता नहीं आ सकती ।’

माता का दर्जा पुत्र के प्रति उसका प्यार का कोई माप तौल नहीं कर सकता । एकदिन स्वामी विवेकानन्द सभा में-माता पूजनीय और उसकी महत्ता का वर्णन कर रहे थे कि इतने में किसी ने कहा कि माता को महान् क्यों समझा जाता है ? उन्होंने कहा कि जिस माता ने दशवें मास तक बच्चे को धारण कर जन्म दिया, यह साधारण बात नहीं है । उस व्यक्ति ने कहा कि इसमें कौन सी बड़ी बात है ? तब विवेकानन्द जी बोले कि तुम केवल डेढ़ किलो का पत्थर अपने पेट पर बांधकर केवल ९ घन्टा के लिये अपना काम करते हुए हमें दिखलाओ, वही हुआ उसके पेट पर पत्थर बांध दिया गया, नौ

घण्टा तो दूर की बात रही, दो घन्टा भी नहीं रख पाया, तब उसे बोध हो गया कि माँ कितनी महान है । वेद का आदेश है :—'अनुव्रतःपितुःपुत्रो माता भवतु संमनाः । जषा पत्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिवाम ॥' (अथर्व० ३,३०,२)

अर्थ—पुत्र पिता का अनुकरण करने वाला हो और माता के साथ एक मन वाला हो । पत्नी अपने पति के लिये मीठी और शान्ति से भरी हुई वाणी बोले ।

मनु महाराज लिखे हैं—'माता पिता का स्थान बहुत ऊँचा है । जो बालक अपने माता पिता और गुरू की आज्ञा का पालन करते हैं, वे सदा यशस्वी, विद्वान् और श्रेष्ठ बनते हैं ।

मानव जीवन का प्रारम्भ ही नारी की गोद से हुआ है, इसलिये कहा गया है कि वह अपने कर्त्तव्य की गुरुता के भार को सहर्ष वहन करती हुई माता मानव को संसार में व्यवहार के लिये सक्षम बनाती है । वह प्रेरणा है जो मुर्दे में जान डाल देती है, इसलिये यह प्रसिद्ध है कि प्रत्येक पुरुष के सफलता के पीछे नारी का हाथ रहा और रहता है । वह पुजनीय, वन्दनीय है जिसे देवता भी नमस्कार करते हैं। जैसे मनु महाराज ने लिखा है —'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' एक समय था जो नारी ही समस्त समाज की 'मेरुदण्ड' थी । उत्तम योग्य व सुसंस्कृरित सन्तान मातृत्व की अमृत मय गोद में पलकर बनती थी । 'क्षत्रपति शिवाजी को वीरत्व की प्राप्ति उनकी माता' 'जीजाबाई' से प्राप्त हुई थी, और वीर हकीकत राय को धर्म की शिक्षा उनकी माता कौराँ ने दी थी—माता निर्माता भवति एवं नास्ति मातृसमोगुण' बच्चों की प्रथम पाठशाला 'माँ' की गोद है । मात्र पांच वर्षों में शिक्षित मातायें, सच्चे मानव तैयार कर देती हैं । वह माता देवी की मूर्त्ति कहलाती है , जिसमें लज्जा व शालीनता हो । अतः जो अपने गृहस्था को स्वर्ग सम बनाती है, जो सहनशील और जो अपने स्वामी की अनुगामिन होती है, वही पतिव्रता कहलाती है ।'

परमात्मा ने वेद द्वारा आदेश दिया है 'मनुर्भवः अर्थात् मानव बनो । मानव कैसे बनें, हाथ पाव, आंख कान, सब तो है, फिर कैसे मानव बने ? परमात्मा का उपदेश है', आत्मवत सर्वभूतेषु ! समस्त आत्माओं को अपने आत्मा के समान जानना । धरती पर बहुत से लोग हैं जो अन्य आत्माओं को अपनी आत्मा के समान नहीं मानते, इसलिये परमात्मा का उपदेश है कि मानव बनो ।

यह शिक्षा मात्र वेद में है, दुनिया की किसी मजहबी ग्रन्थ में यह मिलना सम्भव नहीं , कारण मजहबी ग्रन्थ मात्र वर्ग विशेष कों, सम्प्रदाय विशेष को उपदेश दिया मानव मात्र के लिये नहीं । इसलिये कुरान का अल्लाह सिर्फ मुसलमान बनने को कहा । यहां तक कि इस्लाम को छोड़ कोई धर्म नहीं बताया है । इन्नदिदन इन्दाल्लाहिल, इस्लाम, कुरान, सुरा, इमराऩ, आ. १९ तथा ८५ को देखें ।

धन्यवाद दीजिये आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द को, कि जिन्होंने मानव मात्र को चिल्ला चिल्ला कर कहा कि भाईयों हमें मानव बनना है, इन हिन्दू मुस्लिम का चक्कर को छोड़ो, मानव बन जाओ । मानव बनने से सभी शंकाओं का समाधान हैं । मानव उसी को कहना जो मननशील होकर अन्यों के सुख दुःख लाभ व हानि को समझे । अन्यायकारी राजा बलवान से न डरे और निर्धन धर्मात्मा से डरे उनके साथ प्रियाचरण करे चाहे वह अनाथ, निर्धन निर्बल ही क्यों न हो । किन्तु धरती पर जितने मजहबी ग्रन्थ हैं वह मानव को मानव बनने के बजाय कहीं मुसलमान तो कहीं ईसाई, जैनी बोधिष्ट बनने की बात कही ।

आज समग्र दुनियां में देखा जा रहा है अपने ख़ून और दूसरे के खून को पानी समझने लगे हैं। आज दुनिया भर में इस्लामी जिहाद छिड़ी हुई हैं ।

कुरान में अल्लाह ने यहाँ तक कहा कि जो इमान नहीं लाते, कुरान पर, रसूल पर जिब्राईल मिकाईल पर, वह सबके सब काफिर हैं । मनकाना, अदुवललिल्ला काफेरीन । सुरा बकर आ० ९८ को देखें ।

अर्थ—जो अल्लाह को न माने, अल्लाह का दुश्मन है, फरिश्तों का दुश्मन है, रसूल का दुश्मन है, जिबरील, मीकाईल का दुश्मन है । वह सब काफिर है इन्हें मौत के घाट उतारो ।

आज धरती पर जितने भी काण्ड इस्लाम के मानने वालों द्वारा हो रहा है, वह यही कुरानी शिक्षा ही है जिसपर इस्लाम के मानने वाले अमल कर रहे हैं । इन सबके प्रेरणा स्रोत कुरान ही है तथा मजहबी ग्रन्थ ही है ।

यदि धार्मिक शिक्षा सही हो तो दानव देवता बन जाता है और यदि उसका सही इस्तेमाल नहीं किया गया तो मानव हिंसक बन जाता है । कुरान में खुदा की एक वाणी है—'सब स्तुति परमेश्वर के वास्ते है, जो परव रदिगार अर्थात् पालनहार है सब संसार का । क्षमा करनेवाला दयालु है (म० ।सि। सूर बुल्फातिहाआ, २) और यह भी कि प्रारम्भ साथ नाम अल्लाह के क्षमा करने वाला दयालु खुदा ।'यदि मुसलमान निर्दयी नहीं है तो दयालु भी नही है, यदि दयालु होते तो कुरान के आदेश का अवश्य पालन करते । ऋषि दयानन्द ने इसकी समीक्षा इस प्रकार की है—यदि कुरान का खुदा संसार का पालन करने वाला होता और यदि सब पर क्षमा दया करता तो पशु आदि को मुसलमानों के हाथ से मरवाने का हुक्म न देता । जो क्षमा करने वाला है तो क्या पापियों पर भी क्षमा करेगा ? और जो वैसा है तो आगे लिखेंगे कि काफिरों को कत्ल करो अर्थात् जो कुरान और पैगम्बर को नहीं मानते वे काफिर है, ऐसा क्यों कहता ? अतः ऐसी शिक्षा से आतंकवाद को काफी बढ़ावा मिल रहा है क्योंकि कुरान का खुदा तो उन्हें क्षमा कर ही देगा ।

श्री जगदीश बत्रा लायलपुरी, साप्ताहिक 'सत्य चक्र' में निष्काम कर्म आसान नहीं, शीर्षक लेख में लिखे हैं कि—"कर्म का अधिकार कई बार कठिन परीक्षा लेता है । जब भारत मुगलों के आधीन था। तब नबाब सर हिंद ने गुरु गोविन्द सिंह के दो छोटे पुत्रों को कैद कर लिया । उसने गुरु पुत्रों से कहा कि तुम मुसलमान हो जाओ । मैं तुम्हारा विवाह राजकुमारियों से करा दूंगा और तुम सुख पावोगे । लेकिन वे वीर बालक अपने धर्म पर अडिग रहे । नबाब ने दुर्ग की दीवार गिरा दी और दोनों बालकों को दीवार में चिनवा दिये गये । आज इतिहास उन मुगल शासकों को धर्मान्धता वीर बालकों को बलिदानी के रूप में याद कर रहा है ।"

ईसा को उनके विरोधी लोगों ने क्रास पर कील ठोंककर लटकाया उन विरोधियों के लिये परमात्मा पुत्र ईसा ने, परमात्मा से उनको माफ करने की विनती की । उन्हें नहीं पता था कि उनके अपने अनुयायी ईस्ट इण्डिया कम्पनी बनाकर भारत पर कब्जा करके लूटेंगे तथा जलियावाले बाग में निर्दोष निहत्थों को गोलियों से भूनेंगे । क्या इसके लिये भी ईसा को परमात्मा से माफ करने की विनती करनी हुई होगी ? वर्त्तमान में ईसा का धर्म प्रचार करने के लिये, पाल दिनाकरण द्वारा उनकी प्रार्थना की खरीद बिक्री करके विजय दिलवाने, प्रधान मंत्री तक बनवाने के लिये प्रार्थना का कॉन्टेक्ट करना क्या ईश्वर पुत्र

ईसा को सहन होता होगा । कब तक उन्हें लागों के कुकृत्यों के लिये क्षमा मांगनी होगी ।'

कैसा समय है आज अनपढ़ मजदूरी करके तीन सौ रुपये रोज कमा रहे हैं लेकिन इंजीनियरिंग मेडिकल करने वाले बेरोजगार आत्महत्यायें कर रहे हैं ।

इसके अलावा आज स्कूल एवं कॉलेज की लड़कियाँ सुरक्षित नहीं हैं । सरकार के तरफ से प्रशासन व्यवस्था में ढिलाई के कारण, अत्याचारी धर्मान्ध लोग बलात्कार जैसे महापाप कर रहे हैं । ऐसे को कड़ी से कड़ी सजा एवं मृत्यु दण्ड का नियम बनना चाहिये, ताकि बहन बेटियों को कोई कुदृष्टि से न देख सके । भ्रूण हत्या और हत्या को भी रोकना है । इन सबके प्रति सरकार को जागरूक होना है और ऐसी व्यवस्था करनी है ताकि देश की वह बेटियाँ कही आने जाने में निर्भय और स्वतन्त्र रहे। फिर भी उनके साथ कोई आपन जन अवश्य होना चाहिये ।

अनुज बधु भगिनी सुत नारी, सुनु शठ ये कन्यासमचारी ।

इनहि कुदृष्टि विलोकहि जोई ताहि बधै कछूपाप न होई ।। (रा. किष्किन्धा-काण्ड)

मु० पोष्ट—मुरारई, (प० बाजार) जिला—वीरभूम (प० बंगाल) ७३१२१९

दूसभाष : ९०४६७७३७३४

प्रो० महावीर, उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त

वैदिक विद्वान् प्रो० महावीर को उत्तराखण्ड राज्य के माननीय राज्यपाल डॉ. अजीज कुरैशी द्वारा उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त करने पर संस्कृत जगत्, आर्य जगत् और देश के गुरुकुलों में प्रसन्नता की लहर, व्याप्त हो गई ।

संस्कृत वेद एवं हिन्दी में एम. ए., व्याकरण से आचार्य, पी-एच.डी. तथा वैदिक वाङ्मय. में डी. लिट् की सर्वोच्च शोधोपाधि से विभूषित प्रो. महावीर ४० वर्षों से अधिक समय से उच्च शिक्षा से जुड़े हुए है आपके निर्देशन में ६० शोधार्थी पी. एच. डी. शोधोपाधि प्राप्त कर चुकें है ।

देश विदेश में वैदिक ज्ञान गंगा प्रवाहित करने वाले आचार्य महावीर को विभागाध्यक्ष, संकायाध्यक्ष, कुलसचिव एवं उपकुपति आदि पदों पर कार्य करने का सुदीर्घ अनुभव प्राप्त है । आपकी संस्कृत सेवा एवं विद्वत्ता को देखते हुए हुए उत्तराखण्ड के संस्कृत प्रेमी मुख्य मन्त्रियों ने आपको उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी का सदस्य एवं उपाध्यक्ष मनोनीत किया था । इस प्रकार विश्वविद्यालय प्रशासन एवं संस्कृत अकादमी के सभी महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य करने वाले प्रो. महावीर की कुलपति पद पर नियुक्ति से सर्वत्र हर्ष व्याप्त है ।

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती, अमर हुतात्मा श्रद्धानन्द एवं देश के अमर शहीदों को अपना आदर्श और प्रेरणास्रोत मानने वाले आचार्य महावीर अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किये जा चुके हैं । इनमें प्रमुख हैं—मुम्बई का वेद-वेदाङ्ग पुरस्कार, नागपुर का आर्य विभूषण पुरस्कार, इलाहाबाद का पं० गगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार, भारतमाता मन्दिर, हरिद्वार विशिष्ट पुरस्कार ।

अमेरिका इंग्लैण्ड और नेपाल आदि देशों में आर्य संस्कृति का उद्घोष करने वाले प्रो. महावीर को शत-शत अभिनन्दन ।

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

बसन्तोत्सव :—बसन्त पंचमी पर्व १५ फरवरी २०१३ दिन शुक्रवार को प्रातः १० बजे से १ बजे तक आर्य समाज कलकत्ता के सभागार में मनाया गया। इस अवसर पर पं० आत्मानन्द शास्त्री एवं पं० देवव्रत तिवारी जी के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त भजन, काव्य पाठ के अतिरिक्त वक्ताओं ने बसन्त ऋतु पर अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर प्रधान श्री मनीराम आर्य जी ने वीर हकीकत राय के बलिदान की चर्चा करते हुए उनके जीवन पर प्रकाश डाला। श्रीमती सत्यवती गुप्ता, श्री विनय कुमार आर्य, श्री सत्यप्रकाश जायसवाल, श्री विवेक जायसवाल, श्री घनश्याम मौर्य तथा पं० देवव्रत तिवारी ने भजन एवं अपने विचार प्रकट किये।

शोक समाचार —-(१) आर्य समाज कलकत्ता के आचार्य पं० उमाकान्त उपाध्याय जी के पौत्र तथा पं० योगेशराज उपाध्याय जी के पुत्र सिद्धान्त उपाध्याय का लगभग ८ वर्ष की अल्पायु में असामयिक निधन हो गया है।

(२) आर्य स्त्री समाज कलकत्ता की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती निर्मला गुप्ता जी आयु ८८ वर्ष एवं उनके पौत्र श्री वेद प्रकाश गुप्त जी आयु लगभग ४८ वर्ष तथा पौत्रवधु श्रीमती कविता गुप्ता आयु लगभग ४३ वर्ष की अग्नि दुर्घटना में असामयिक निधन हो गया है।

आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक १० फरवरी, ३ मार्च एवं १० मार्च २०१३ के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग पर एकत्रित समस्त आर्य जनों ने २ मिनट का मौन धारण कर दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति के लिए तथा शोक सन्तप्त परिवारों को वियोगजन्य दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

आर्य समाज कलकत्ता के तत्वावधान में आगामी कार्यक्रम :

विराट महिला सत्संग

बुधवार १७ अप्रैल से रविवार २१ अप्रैल २०१३ पर्यन्त, स्थान–आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-७००००६ दूरभाष—२२४१-३४३९

समय–अपराह्न ३.३० बजे से ६ बजे तक

आमन्त्रित विदुषी—**आचार्या नन्दिता शास्त्री**, पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी

भजनोपदेशिका—**विदुषी बहन श्रीमती अंजु सुमन (कवियित्री)** समस्तीपुर (बिहार)

कार्यक्रम—**यज्ञ, भजन एवं पारिवारिक, धार्मिक संस्कारों पर उपदेश एवं प्रवचन**

सभी परिवारों से महिलाएं एवं बच्चे सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :

प्रधाना : **श्रीमती सन्तोष गोयल**

आर्य स्त्री समाज कलकत्ता
१९, विधान सरणी, कोलकाता-६

मंत्रिणी : **श्रीमती प्रवीणा जायसवाल**

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए पं० उमाकान्त उपाध्याय, एम०ए० द्वारा प्रकाशित तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित। मो. : ९८३०३७०४६३